महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे की मुखपत्रिका

समिति संवाद

हर माह १० तारीख को प्रकाशित

पंजीकरण क्र. MAHHIN/2010/48645

वर्ष : १९, अप्रैल-मई २०२२ अंक : ६४ वाँ मूल्य : ₹१०/- वार्षिक : ₹१००/-

प्राणिमात्र की साँस, हिन्दू संस्कृति के आदर्श पुरुष श्रीरामचंद्रजी

भारतीय संस्कृति के आदर्श सेवक श्री हनुमान

भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर - भारतीय राज्यघटना के शिल्पकार

भीमराव रामजी आम्बेडकर

(१४ अप्रैल, १८९१-६ दिसम्बर १९५६)

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर नाम से लोकप्रिय भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाजसुधारक थे। उन्होंने दलित बौद्ध आन्दोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था।

मानवाधिकार जैसे दलितों एवं दलित आदिवासियों के मंदिर प्रवेश पानी पीने छुआछूत, जातिपाति, ऊँच-नीच जैसी सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए मनुस्मृति दहन (१९२७), महाड सत्याग्रह (वर्ष १९२८), नासिक सत्याग्रह (वर्ष १९३०), येवला की गर्जना (वर्ष १९३५) जैसे आंदोलन चलाये।

बेजुबान, शोषित और अशिक्षित लोगों को जगाने के लिए वर्ष १९२७ से १९५६ के दौरान मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता और प्रबुद्ध भारत नामक पाँच साप्ताहिक एवं पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया।

विवादों की चर्चा में जग जमते देखें।
आओ संवाद करें युगों को पल में पिघलते देखें।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे
की मुखपत्रिका

समिति संवाद

वर्ष : १९	अप्रैल-मई २०२२	
अंक : ६४ वाँ	मूल्य रु. १०/-	वार्षिक रु. १००/-

* संपादक *

ज. गं. फगरे

- संपादकीय पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिंदी भवन, १४३९, शुक्रवार पेठ,
बाजीराव रोड, शेवडे गली,
पुणे : ४११ ००२ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनि : ०२०-२४४५३१५९
ई-मेल : **jgfagre@gmail.com**

अनुक्रम

- संपादकीय... २
- बदला लिया मैंने : अनंत कान्हेरे ३
- परिचय - सुहास जोशी ४
- पत्रसंवाद ६
- हिन्दी प्रेमी - दास का अंत:करण! ६
- अनुवाद परंपरा में अभिज्ञान शाकुंतल और प्रत्यभिज्ञा दर्शन ८
- सावरकर जयंती, रवींद्रनाथ ठाकूर जयंती, हजारीप्रसाद द्विवेदी पुण्यतिथि ९
- आनन्द का असली अर्थ ११
- सिर्फ अपने लिए खाना विकृति है, दूसरों को खिलाना संस्कृति है। १३
- बोधगम्य, प्रबुद्ध - सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध १४
- मंगलमय नव वर्ष १५
- रामायण और रामचरितमानस... १६
- सन्देश १७
- भारत के कुछ व्रत और त्यौहार २०
- सफर अच्छा लगे २१
- पवित्र सोच २२
- ढाई आखर की महिमा २५
- प्रार्थना २५
- सदियों गूंजते रहेंगे लताजी के गीत... २६
- योग भारती : भारत का ही नहीं विश्व में अद्वितीय संस्थान २७
- आजादी आंदोलन : वे लोग, वे बातें २८
- जयशंकर प्रसाद २९
- स्वामी विवेकानंद का उत्तराखंड का मायावती आश्रम ३०
- एक मई कामगार दिन - श्रम दिन ३१

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं । संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

मुद्रक- प्रकाशक : जयराम गंगाधर फगरे द्वारा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के लिए पालवी मुद्रणालय, ९८५ सदाशिव पेठ, पुणे ३० से मुद्रित करवाकर हिंदी भवन, १४३९, शुक्रवार पेठ, बाजीराव रोड, शेवडे गल्ली, पुणे ४११००२ (महाराष्ट्र) से प्रकाशित की गई । **संपादक :** जयराम गंगाधर फगरे.

Printed & Published by : J. G. Fagare on behalf of Maharashtra Rashtrabhasha Prachar Samiti & Printed at Palvi Mudranalaya, 985 Sadashiv Peth, Pune-30 and Published at 1439, Shukrawar Peth, Bajirao Road, Pune-2.

Editor : Jayram Gangadhar Fagare

समाज को सुसंस्कृत बनाने कटिपथ व्रत और त्यौहार

संपादकीय...

भारत देश त्यौहारों की भूमि है। भारतीय संस्कृति का जन्म व्यक्ति को तथा समाज को सुसंस्कृत बनाने की दृष्टि से हुआ है। उसके प्रत्येक सिद्धान्त, आदर्श एवं विधि-विधान की रचना इसी दृष्टि से की गई है कि उसका प्रभाव जन-मानस को ऊँचा उठाने एवं परिष्कृत बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

हमारे वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है। इसलिए इसको सम्वतसर प्रतिपदा कहते हैं। 'ब्रह्मपुराण' में लिखा है कि ब्रह्मा ने आज के दिन ही सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी।

चैत्र मासि जगत्त् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की। इसी दिन भगवान के मत्स्यावतार का आविर्भाव हुआ था। सतयुग का प्रारम्भ इसी दिन हुआ था और भारतवर्ष के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य के सम्वत्त् का प्रथम दिन भी यही है।

हिन्दुओं के अन्य त्यौहारों में तो उनके विशेष धार्मिक विधान किये जाते हैं, किसी न किसी देवता का पूजन होता है, तीर्थस्नान, दान, वेदपाठ आदि का भी नियम पालन करना होता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल नवमी तक नवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध है। वर्ष में दो 'नवरात्रि' होती हैं। एक आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर नवमी तक रहती है और दूसरी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर नवमी तक। पहली को शारदीय नवरात्रि कहते हैं और दूसरी को बासंती नवरात्रि। देवी के भक्त इस अवसर पर 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ करते हैं। कुछ लोग रामायण और महाभारत आदि का भी पाठ करते हैं।

अखिल जगत् की माता भगवती दुर्गा की आराधना भारत में सदा से होती आई है। यश, राज्य, पुत्र, आयु और धन-सम्पत्ति की वृद्धि के लिए देवी के पूजन का विशेष महात्म्य है। इसीलिये भगवान व्यास ने कहा है-

''दुर्गे स्मृता हरषि भीतिमयशेष जन्तो:।
स्वस्थै: स्मृताभितीव शुभां ददासि।।
दारिद्र्य दु:ख भय हारिणीकात्मवदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदाद्रचित्ता।।''

अर्थात् ''हे माता तू स्मरण मात्र से सब भयों का निराकरण कर देती है और जो तुझे स्वस्थ मन से भजते हैं उनके दरिद्रता, भय आदि सब कष्टों को तू हर लेती है।''

भवदीय,

- ज. गं. फगरे

बदला लिया मैंने : अनंत कान्हेरे

- डॉ. विद्या केशव चिटको

पंचवट्या पच रत्नानि सदा सुख प्रदायिनी
गोदावरी कपालेशो रामो वायुस्तपोवने

नासिक में ऐसी क्या समृद्धि है कि दर्शनार्थ आया प्रत्येक जन इस स्थान पर बस जाने के लिए आतुर हो उठता है। तो इसका उत्तर है पंचवटी क्षेत्र के पंच रत्न सुख शांति समृद्धि दाता है। गोदावरी, कपालेश्वर, प्रभु राम, हवामान और तपोवन।

अनंत कान्हेरे

समर्थ रामदास स्वामी ने यहाँ बारह वर्ष पुरश्चरण तप साधना की थी। जनस्थान गोदा तट परम पावनी पंचवटी जहां पडी कृपादृष्टि रघुराम की।

नासिक की भूमि मंत्र भूमि, देव भूमि, धर्म भूमि, कर्म भूमि, योद्धाओं की शौर्य भूमि और मोक्ष भूमि है। यह जनम स्थान साधकों का सिद्ध स्थान है तो भगवान शिव शंकर और प्रभु रामचन्द्र के चरण स्पर्श से पुनीत यह तपोभूमि है। शैव, वैष्णव, शाक्त, योगमार्गी, वैदिक धर्मानुयायी और भागवत धर्मियों का आश्रय स्थान ब्राह्मण, बौद्ध, जैन विविध संस्कृतियों की संगम स्थली यह भूमि है।

महाराष्ट्र प्रदेश को स्वतंत्र करने के लिए इसवीं सन् पूर्व प्रथम शतक में लढवैय्या गौतमी सातकर्णी से शुरू कर भारत को आजादी दिलाने तक का एक लम्बा इतिहास है। देश की आजादी के इतिहास का एक पृष्ठ भी स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर की राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रहित, राष्ट्र कल्याण विचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किये बिना लिखा ही नहीं जा सकता है। ऐसी नासिक नगरी पंचवटी और गोदा मैय्या की महिमा का बयान ऋषि मुनियों ने किया है।

धन्य धन्य मानवा लोके कुतस्तेषां तु दुष्कृत्यम
दृष्टा यै गौतमी गंगा सिंहस्थ सुर मंत्रिणी

गौतम ऋषि की तपश्चर्या का फल है गोदावरी। इस गोदावरी को शत शत नमन करते हुए रीतिकालीन काव्यशास्त्रीय आचार्य राजदरबारी कवि केशव दास कहते हैं...

''पाप संहारिणी, लीला मनोहारिणी, देवेष शोभाधारिणी. विषमय यह गोदावरी अमृतन के फल देती केसव जीवन हार को दुख अषेश हर लेती।''

इस गोदा तट पर १९ अप्रैल सन् १९१८ को ब्रिटिश अधिकारी सिविल कमिश्नर के ब्रिग्जस का नासिक के शासन की बागडोर संभालने के लिए आगमन हुआ। अत्यंत नृशंस व्यक्ति। भारतीयों को अपना गुलाम अपने पैर की जूती समझ उसने नासिक वासियों पर अनन्वित अत्याचार करने शुरू कर दिये थे। आबाल बृद्ध, स्त्री, पुरूष, धनी, निर्धन, सवर्ण, अवर्ण, छोटा, बडा, सबल, निर्बल, लूला लंगडा, अपाहिज किसी को भी उसने नहीं बख्शा था। उसने नगरवासियों की नींद हराम कर दी थी। नासिक नगरवासी उससे त्रस्त पीडित थे।

दशहरे का दिन। सर्वत्र आनंद उल्लास उमंग का वातावरण था। राम की विजययात्रा का जुलूस निकाला गया था। जिसका प्रतिनिधित्व बाबाराव

परिचय - सुहास जोशी

नूमवीय होने पर गर्व महसूस करते हुए हिन्दी में लिखें 'ऑस्ट्रेलिया के सफर' का वर्णन किया है, मैं तहे दिल से जोशीका अभिनन्दन करता हूँ।

पुणे के नूमवीय बी.एम.सी.सी. के महाविद्यालय के पदवीधर हैं।

सावरकर कर रहे थे। ''वन्दे मातरम्'' के घोष से आकाश निनादित था। कमिशनर ब्रिग्जस की आज्ञा से अंग्रेज पुलिस ने जुलूस को आगे बढने से रोका। उसे पीछे लौटाने के लिए लाठी प्रहार करना शुरू किया। बाबा सावरकर ने गुस्से में आकर कुछ सिपाहियों पर लात घूंसे जमाये। उनके कान, नाक से खून बहने लगा था। बाबा सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर हत्या का आरोप लगा। मुकदमा चला। यह मुकदमा 'वन्दे मातरम्' के नाम से जाना जाता है। उनकी वकालत की सनद रद्द कर दी गई। घर की तलाशी ली गई।

अंग्रेज पुलिस ने सिर्फ घर की तलाशी ही नहीं ली साथ में मूल्यवान सामान और चांदी के बर्तन भांडे भी लूट कर ले गये। सभी क्षुब्ध थे। सर्वत्र असन्तोष का वातावरण था। कमिशनर ब्रिग्जस को सर्वत्र धिक्कारा जा रहा था।

सन् १९०६ में एक नर केसरी दहाडा था ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे मैं लेकर ही रहूँगा'' इस दहाड से आसेतु हिमालय भारत सोते से हडबडा कर जाग उठा। ब्रिटिश सत्ता की चूलें हिल गई। लार्ड कर्जन द्वारा किया गया बंग विभाजन एक नीच कृत्य पाप था। जिसका तीव्र निषेध पूरे हिन्दुस्तान ने किया। नासिक उससे अछूता नहीं रहा। बाबा खरे नामक एक राष्ट्र प्रेमी के नेतृत्व में बंग भंग के निषेध में सभा बैठके होती थी नारे लगाना, वंदे मातरम की घन गर्जन घोषणा, स्वदेशी का प्रचार विदेशी का बहिष्कार राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार, मद्य निरोधन के निदर्शन में सभा बैठकें प्रभात फेरी गोदातट पर खुली जगह मैदान गली चौराहा पर लोग जमा होते। अंग्रेज शासन का खुल्लमखुल्ला विरोध किया जाता। सर्वत्र एक असंतोष का वातावरण पनप रहा था। कमिशनर ब्रिग्जस ने बाबा खरे को जहाल भाषण न करने की ताकीद दी। पर वह चितपावनी ब्राह्मण लाल मुंह के अंग्रेज की बन्दर घुडकी से कहां डरने वाला था? अब वह पहले से भी ज्यादा दुगुने जोश से भाषण देता। सभायें बैठकें लेता । भारी संख्या में लोक इकट्ठे होते। बाबा खरे को गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी बेदम पिटाई की गई।

नासिक वासियों का असंतोष उग्र रूप धारण कर चुका था। राष्ट्र प्रेम देश भक्ति अपने देश के लिए आत्मार्पण की विचार अग्नि धधक रही थी। सशस्त्र क्रान्ति द्वारा ही देश को आजाद किया जा सकता है यह विचार जड पकड रहा था। देश प्रेम भक्ति भावपूरित कविता कवि गोविंदाग्रज ने लिखी वीर रस ओजपूर्ण कविता सहस्र कंठ स्वर से गायी जाती।

इसी समय लाला लजपत राय की गिरफ्तारी और उन पर किये गये लाठी प्रहार से उनकी मृत्यु ने भडकती अग्नि में घृत उंडेलने का काम किया। बाबा सावरकर ने ''अभिनव पद्यमाला'' छोटी सी पुस्तिका छाप कर युवाओं में वितरित की। यह पुस्तिका क्रांतिकारी विचारों की पृष्ठ भूमि तैयार करती सिद्ध कर बाबा राव को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें कालापानी की सजा दी गई। ब्रिटिश सरकार की दमन नीति और अत्याचार दिन पर दिन बढते ही जा रहे थे। नासिक वासियों के असंतोष और विद्रोह की धार भी तेज होती जा रही

थी। अंग्रेजों से बदला लेना ही है। इसी समय नासिक में नए कलक्टर जैक्सन की नियुक्ति हुई। यह व्यक्ति क्रूरवर्मा तो था ही साथ ही उददाम भी था। कलेक्टर के पद पर आने पर उसने 'वन्दे मातरम' कहने पर रोक लगा दी। यदि कोई वन्दे मातरम कहता तो उस पर कोडे बरसाये जाते। एक बार एक कीर्तनकार को अपने प्रवचन में देश भक्ति भाव का वाक्य बोलने पर उसे पकड कर जेल में बन्द कर दिया गया। उसे बेदम पीटा गया।

एक वकील प्रवचन सुनने के लिए गये थे। वह उनका अपराध। उनकी वकालत की सनद जप्त कर ली गई। गोल्फ मैदान में विलियम नाम का एक अफसर गोल्फ खेल रहा था। उसकी गेंद मैदान के बाहर रास्ते पर चली गई थी। एक किसान अपनी बैलगाडी हाक रहा था। गेंद उसकी बैलगाडी के नीचे आ गई थी। और उसने वह गेंद उठाकर उस अंग्रेज अफसर के हाथ में नहीं दी। वह उसका अपराध। किसान को इतना पीटा गया इतना पीटा गया कि उसने खून की उल्टी कर अपने प्राण त्याग दिये। विलियम पर हत्या का आरोप लगाया गया। मुकदमा चला। पर कलेक्टर जैक्सन ने उसे निर्दोष साबित कर दिया। इस प्रकार की एक नहीं दो नहीं हजारों घटनाएं हुई। परिणाम स्वरूप नासिक वासी उस पर गालियों की बौछार करते और चाहते थे कि उसे खत्म कर दिया जाय। अंग्रेज अधिकारियों को सबक तो सिखाना ही है। कृष्णाजी गोपाल कर्वे और विनायक नारायण देशपांडे ने कलक्टर जैक्सन की हत्या की योजना बनाई।

साहसी अनंत कान्हेरे युवक इस कार्य के लिए आगे आया। नासिक की क्रांतिकारियों की गुप्त सभा बैठकों में वह शामिल होने लगा। इन्हीं बैठकों में जैक्सन की हत्या का षड्यंत्र रचा गया। हत्या का दिन तारीख समय स्थान निश्चित हुआ। अनंत कान्हेरे ने कलक्टर कचहरी के पास एक दो बार खडे हो कर उसे भली भाँति देख लिया था। तब उसने निश्चय किया कि उस पर गोली दागी जाय। उसने एक दो बार कोशिश भी की पर कार्यसिद्धी में उसे सफलता हासिल नहीं हुयी कान्हेरे अवसर की ताक में था। एक दिन वह मौका हाथ आ ही गया। उसे कहीं से खबर मिली थी कि कलेक्टर जैक्सन साहब विजयानंद थियेटर में ''शारदा'' नाटक देखने के लिए पधारनेवाले हैं। इस सुनहरे मौके को वह हाथ से कैसे जाने देता?

२१ दिसम्बर सन् १९०८। नासिक के नाट्य रसिक विजयानंद थियेटर की ओर चले जा रहे थे। नाट्य प्रेमी जनों का सैलाब उमडा था। गली गली से स्त्री पुरूष सज धज कर विजयानंद की ओर बढे जा रहे थे। थियेटर में कीमती इन्न बेला चमेली के गंध से वातावरण गंधित हो उठा था। सर्वत्र एक उल्लसित वातावरण था। हॉल खचाखच भरा हुआ था। सामने कत्थई रंग का परदा झूल रहा था। सभी की आँखे परदे पर टिकी थी। कब नाटक शुरू होता है। पर इन तीन युवकों की नजर तो प्रेक्षागृह के द्वार की ओर लगी थी। नौ बजे। परदा ऊपर की ओर सरकने लगा था। उसी समय नाट्य गृह के बाहर एक मोटर गाडी आकर रूकी। उस मोटर में से छह फीट ऊँचा कोट पतलून टाई पहने एक रूबाबदार गोरा शख्स अपनी पत्नी के साथ गाडी से उतरा। थियेटर के वरिष्ठ अधिकारियों ने दौडकर जा कर उसका स्वागत किया। कमर तक झुक कर उसका अभिवादन किया। और बडे अदब के साथ प्रेक्षागृह में लाकर सबसे आगे की कुर्सी पर उसे बैठाया। उसे कुर्सी पर आसनस्थ होता देख इन दो युवकों ने अपने कोट की जेब पर हाथ रख कुछ टटोला और फूर्ती से कोट की जेब से भरी पिस्तूल निकाल कर उस व्यक्ति पर निशाना साध फट से दो गोलियाँ दाग दी। पर उस व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये थे इस कारण गोली ऊपर से निकल गई। युवक ने फिर बडी फूर्ती से तीन चार बार पिस्तूल झाडी। गोली लगी और वह

पत्रसंवाद

सेवा में,
श्रीमान् संपादक महोदय
'समिति संवाद', मासिक
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिंदी भवन, पुणे ४११००२. महाराष्ट्र
आदरणीय ज. ग. फगरे साहब के लिए
दो शब्द!

जिस राष्ट्र के लिए, जिसकी सामाजिक सांस्कृतिक वैभव की अक्षुण्णता के लिए, जिस राष्ट्र की सरलतम जनसंपर्क माध्यमों के लिए तथा जिस समाज के संरक्षण हेतु निरंतर मंत्रों के उच्चारण की मंत्रणा के लिए 'गणेशोत्सव', 'शिवजयंति' का उद्घोष लोकमान्य बालगंगाधर तिलक किया था लगभग उसी तरह की राष्ट्रभक्ति की संभावनाओं से ओत-प्रोत आचार्य जयराम गंगाधर फगरे साहब का जीवन-वृत्त है। ९२वें वर्ष में प्रवेश करने वाले राष्ट्र के जुझारू,सजग प्रहरी,राष्ट्रभाषा के संवर्धन हेतु सदैव जाग्रत उद्घोषक परम आदरणीय फगरे साहब के चरण कमलों में मेरा सादर-सविनय-स्पर्शन!

राष्ट्रबोध, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रीय संवेदनाओं को तलाशते फगरे साहब की 'संपादकीय' तथा 'समिति संवाद' के प्रत्येक अंक संग्रहणीय साहित्यिक दस्तावेज हैं जिसके अध्ययन व पठन-पाठन की आहट सदियों बाद भी मानवीय राष्ट्रीय चेतना को जागृत करती रहेगी। वर्तमान आयु के शतक के दशक में प्रविष्ट करनेवाले फगरे साहब ने जीवन का प्रत्येक श्वासोच्छवास केवल और केवल राष्ट्र के लिए उपयोग किया है। हम युवाओं के लिए वे एक सशक्त प्रत्यक्ष प्रेरणास्रोत हैं। उनके उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु हेतु करबद्ध ईश्वर प्रार्थना ।

- संजीव सौरभ
शेठ आनंदीलाल पोद्दार विद्यालय,
मुंबई ४०००५४

हिन्दी प्रेमी - दास का अंत:करण!

आदरणीय संजीवकुमार दास,
सस्नेह नमस्कार।

आपका 'मेल' प्राप्त हुआ। तहे दिल से आभारी हूँ। गाँधी की राष्ट्रभाषा की नीति, स्वयं कार्यान्वय में लाकर राष्ट्रीय अभियान चलाया, उसीका एक भाग प्रेरणा मानकर व्रत लिया। ९२ में ६० से ऊपर साल हिन्दी -सेवी बनकर कार्यरत रहा। राष्ट्राभिमान कर्तव्य मानकर आप लोगों की दुवाएँ लेकर काम कर रहा हूँ। जितना, जैसे बने, अंगीकार होता रहा है। आपके युवा विचार लेकर जीने की कोशिश करूँगा। बहुत बहुत साधुवाद।

हिन्दी सेवी,
- ज. गं. फगरे

जमीन पर लुढक गया। खून से लथ पथ। उसकी प्राणज्योत बुझ गई थी।

शारदा नाटक शुरू होने के पूर्व यह खून का नाटक खेला गया। भगदड मच गई। सभी अपने प्राण मुठ्ठी में लेकर भागे जा रहे थे। नासिक के एक अत्याचारी क्रूर नृशंस अंग्रेज अधिकारी को यम सदन भेज दिया गया था। इस बर्बर शासक अधिकारी पर गोलियाँ चलानेवाला भारत की आजादी की बलिवेदी पर अपने प्राण उत्सर्ग

करनेवाला साहसी निर्भय पराक्रमी नौजवान था अनंत कान्हेरे। पुलिस द्वारा पकड लिया गया था।

सत्रह अठ्ठारह साल का यह नौजवान रत्नागिरी का रहने वाला था। उसकी स्कूली शिक्षा औरंगाबाद में हुई थी। बचपन से ही यह निर्भीक और साहसी था। डर तो उसे पता ही नहीं था। व्यायाम कसरत कर उसने शरीर कमाया था। खेल में भी वह सब समय आगे आगे रहता था। बंग विभाजन के परिणाम स्वरूप पूरे देश में असंतोष की ज्वाला भडक उठी थी। अंग्रेजों के अत्याचारों से सामान्य जनता क्षुब्ध हो उठी थी। अनंत कान्हेरे इन मोटी मोटी बातों से बहुत प्रभावित हुआ था। उसका युवा मन बदला लेने के लिए कसमसा रहा था। कलेक्टर जैक्सन की हत्या कर वह खुश था। उसने बदला लिया था।

कान्हेरे को पकडा गया। उसके दो साथियों विनायक देशपांडे और अण्णा कर्वे को खूब पीटा गया । अनेक प्रकार की शारीरिक यातनायें दी गईं। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। तीनों को फाँसी की सजा सुनाई गई। फांसी की सजा सुन कर ये वीर देश प्रेमी तनिक भी विचलित नहीं हुए।

अनंत ने तो फांसी के तख्त पर चढने के पूर्व अपने कुर्ते की जेब में एक कागज पर लिख रखा था ''मैंने अपना कर्तव्य पूर्ण किया है। जनता दरबार का नियम है कि जो जनता के साथ विश्वास घात करता है उसे देह दंड मिलना ही चाहिए। उस नृशंस को देहान्त दंड देने की जिम्मेदारी मुझ पर सौंपी गई थी। मैंने अपना कर्तव्य पूर्ण किया है। जय। जय भारत माता की जय। वन्दे मातरम्।''

१९ अप्रैल सन् १९१० को प्रात: ब्राह्म बेला में तीनों ने स्नान किया। हाथ में भगवद्गीता पकडी। हृदय से चिपका ली और तीनों शान्त भाव से क्रांतिवीर वधस्तंभ की ओर चले गये।

उनके मुख पर अपार शांति थी। कर्तव्यपूर्ति के भाव से मुख कांतिमान था।

बंगला नं. ८ अक्षर सोसायटी, समर्थ नगर,
नासिक ४२२००५(महाराष्ट्र)
मोबा. : ९५२७३१३३८५

नूमवि १९७१ बॅच सुवर्णमहोत्सवी कार्यक्रम.

अनुवाद परंपरा में अभिज्ञान शाकुंतल और प्रत्यभिज्ञा दर्शन

- डॉ. सरोज गुप्ता

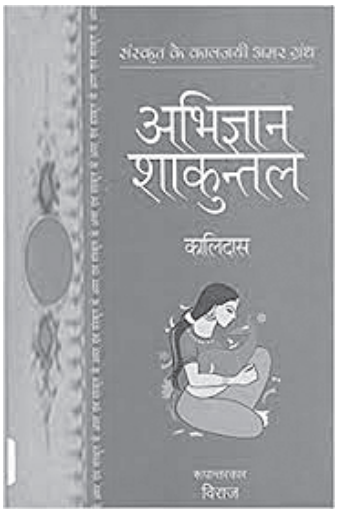

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के पुरोधा कविकुलगुरू कालिदास जी कविताकामिनी के विलास रूप के सृष्टा एवं मनोहारी कल्पना, अनोखी चित्रमयता के कालजयी रचनाकार हैं। जिनकी कविप्रतिभा से उद्‌भूत अभिज्ञान शाकुंतलम् जैसी महान रचना जो महाभारत के आदिपर्व में वर्णित शाकुंतलोपाख्यान की पुनर्नवा व्याख्यायित अद्‌भुत रचना है। अभिज्ञान शाकुंतलम् में कवि ने प्रकृति के मनोहारी दृश्यों के साथ साधारण सांसारिक जीवन के मानवीय क्षितिजों, मानवमन के मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म प्रतिमानों, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, मानवीय संवेदनाओं, मूल्यों, नैतिक जीवन के अन्यान्य अनुभवों को अनेकानेक दृष्टि में प्रकट करके मनुष्य जन्म की सार्थकता, अंतिम सोपान चरम लक्ष्य तक पहुंचाने का श्रेष्ठ उपक्रम सिद्ध किया है।

अभिज्ञान शाकुंतलम् रचना के अनेक भाषाओं में अनुवाद हुए, सभी अनुवाद अद्‌भुत हैं, अलग छाप छोडते हैं। पं. देवीरत्न अवस्थी ने सन् १९६५ में अभिज्ञान शाकुंतल का हिंदी भाषा में अनुवाद किया। फरवरी सन् २०२० में इस अनूदित रचना का प्रकाशन किया जा रहा है। श्रेष्ठ व कालजयी रचनाकर्म शाश्वत होता है। लक्ष्मी अनुग्रह से च्युत रचना समय पर भले ही प्रकाशित न हो पर वह अपना अस्तित्व नहीं खोती। डॉ. उषा मिश्रा 'करील' जी की भतीजी ने जब उनकी रचनाओं का प्रकाशन न हो पाने की व्यथा का परिचय देते हुए बताया तब उनके मन के भावों ने मेरे अंतर्तम को झंकृत किया। मुझे लगा इस संसार सागर में माँ सरस्वती के न जाने कितने पुजारी अपनी अभिव्यक्ति को जन-जन तक पहुंचाने में असमर्थ रहे होंगे। पं. देवीरत्न अवस्थी जी (सन् १९७८ में पं. देवीरत्न अवस्थी जी का देवलोक गमन हुआ।) 'यथानाम तथागुण' के अनुरूप होते हुए भी साहित्य समाज से उपेक्षित रहे जिनकी आज कम से कम दस-पंद्रह से अधिक संस्कृत साहित्य की अनूदित रचनाएं अप्रकाशित हैं। आपके पुत्र स्वर्गीय सत्यवान अवस्थी ने अपनी जीवनलीला की इति, इहलोक की गति और मति को जानकर पिता के परिश्रम द्वारा अनूदित साहित्य की पेटी (संदूक) अपने पुत्र-पुत्रियों को सौंपते हुए कहा था कि बेटा ये संदूक दादाजी की अप्रकाशित रचनाओं से भरा है इसे तुम मेरे परलोकगमन के पश्चात् गंगा मैया को समर्पित कर आना। मैं जीते जी हार गया, उनकी रचनाओं को प्रकाशित नहीं करा पाया। यह संवाद करील जी की भतीजी डॉ. उषा मिश्रा ने भाव-विभोर होकर मुझे बताया। मैंने भी बुंदेली शब्दकोश के प्रकाशन के लिए जो संघर्ष किया, नि:शब्द हूँ। रचना प्रकाशन हेतु प्रयास के संघर्ष को जानते हुए करील जी की संपूर्ण कृतियों के प्रकाशन का संकल्प मैंने लिया है। प्रथम कृति पाठकों के हाथ में इस प्रत्याशा के साथ सौंप रही हूं कि पाठकवृंद

इस अनूदित कृति का स्वागत करेंगे।

पं. देवीरत्न अवस्थी जी की 'अभिज्ञान शाकुंतल' एक ऐसी शाश्वत अनूदित कालजयी रचना है। जिसकी जीवंतता ने हिंदी साहित्य में चार चांद लगाए हैं। अभिज्ञान शाकुंतलम् के प्रारंभ में कवि ने मंगलाचरण के अंतर्गत शिव की आठ मूर्तियों से युक्त आशीर्वादात्मक स्तुति प्रस्तुत की है, जिसके माध्यम से रचना का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है तथा नांदी द्वारा कथा की सूचना दी गई है। सर्वशक्तिमान शिव के अस्तित्व को आठ रूपों में प्रस्तुत करके यह बताया है कि संपूर्ण सृष्टि शिवशक्ति युक्त ही है। परंतु मन के विभ्रम, तमोगुण तथा अज्ञानतावश अपने स्वरूप को नहीं पहचानते। अभिज्ञान-अंगूठी के माध्यम से अपने मूल स्वरूप का स्मरण किया गया है। जीवरूप आद्या सृष्टि शकुंतला, साक्षात् शिव अर्थात् राजा दुष्यंत जो पंचमहाभूतों से युक्त तेजस्वी है। विधिहुतम् या हवि द्वारा बीज रूप में वीर्य धारण करती है। अज्ञान के कारण वह विस्मृति में रहती है परंतु ज्ञानरूपप अंगूठी से अभिज्ञान हो जाता है वह अपने स्वरूप से साक्षात्कार करती है। परमेश्वर ने सर्वप्रथम जल की उत्पत्ति की फिर अग्नि आहुति के लिए, यज्ञादि-समय के लिए सूर्य चंद्रमा। यजमान जीव रूप में, यज्ञ की संपन्नता के लिए पृथ्वी, प्रकृति तथा आकाश शब्द गुण के लिए, वायु प्राण सांस लेने के लिए, ये आठ रूपों से संसार की रचना हुई है। इन शिव के आठ रूपों से ही संसार का उपकार होता रहे।

कवि कहते हैं -

'सृष्टा की सृष्टि आद्या, जल संधि भरिणी,
सञ्जला होत्रिणी जो, दो कालों की विधात्री,
श्रवणगुणवती विश्व में जो कि छाई,
जो बीजों की धरित्री, प्रकृति बन रही,
प्राणदा प्राणियों की, वे आठों मूर्तियां हों
उन प्रभु शिव की, आपको इष्टदात्री।'

वि. दा. सावरकर जयंती

जन्म : २८ मई १८८३, भगूर, जि. नासिक
मृत्यू : २६ फरवरी १९६६, मुंबई

रवींद्रनाथ ठाकूर जयंती

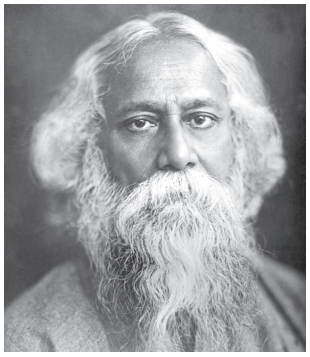

जन्म : ७ मई १८६१, कोलकता
मृत्यु : ७ अगस्त १९४१, कोलकता

हजारीप्रसाद द्विवेदी पुण्यतिथि

जन्म : १९ अगस्त १९०७, उत्तरप्रदेश
मृत्यु : १९ मई १९७९, दिल्ली

शिव अर्थात् दुष्यंत राजा के रूप में सबकी रक्षा करें। शकुंतला आद्या सृष्टि है जो दुष्यंत के वीर्य को धारण करती है। संसार प्रकृति और पुरूष से ही गतिमान है। यजमान ऋषि कण्व हैं। ये द्वे कालं के रूप में सूर्य और चंद्रमा रूपी अनुसूया, प्रियंवदा हैं जो शापकाल की समाप्ति के समय को जानती हैं। श्रुति विषय गुणा के द्वारा शकुंतला के गुण दुष्यंत के द्वार पर जाने से संपूर्ण संसार में फैल जाते हैं। सर्व बीज प्रकृति अर्थात् भरत का जन्म उत्पत्ति सूचना मिलना। यथा प्राणिन:प्राणवंत: के अनुसार भरत का शकुंतला को लेकर नगर में आना, राजा दुष्यंत में शकुंतला का मिलन होना आदि घटनाओं का अद्भुत वर्णन किया है।

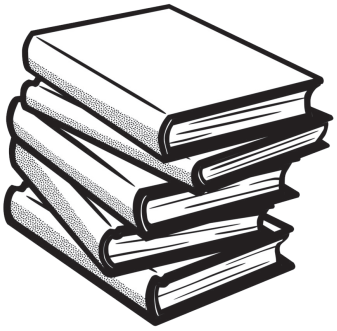

राजा दुष्यंत के प्रणय निवेदन पश्चात् शकुंतला से गंधर्व विवाह पश्चात जब दुष्यंत शकुंतला को विस्मृत कर देते हैं तब शार्गंख गांधर्व विवाह–प्रेम विवाह के दोषों, मनमानी चंचलता पर इस प्रकार के विचार व्यक्त करते हैं– 'परीक्षा चाहिए होनी सदा एकांत प्रेम की।

अज्ञातशील वाले ही हो जाते शत्रु अंत में।'

रचनाकार की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा को पाठक वर्ग इस अनुवाद में महसूस कर सकेंगे। जिसमें कवि ने वाल्मीकि रामायण की सीता की तरह ऋषि कण्व की पोषिता पुत्री शकुंतला जो तपस्विनियों के संसर्ग में, प्राकृतिक वातावरण में, रक्षणीय श्रीराम और भरत जैसे पुत्रों को प्रकृति की गोद में अपनी यथासामर्थ्य शक्ति के अनुरूप अनुग्रह की आकांक्षिणी बन जन्म देती हैं।

इस रचना में ऋषि कण्व विदा के अवसर पर कहते हैं–

'कन्या पराई बस संपदा है,
मैंने चुकाया ऋण जो लदा था।
है शांत मेरा मन शांति द्वारा,
धरोहरों का भुगतानकारी।'

जब बेटी विदा होती है तो पिता का ही हृदय विदीर्ण होता है। मां जननी है, उसे अपना सृष्टिधर्म ज्ञात है, मां पृथ्वी की तरह धैर्यवान भी है। अपने आंसुओं को वह अपने आंचल में भिगो देती है पर पिता में वह क्षमता कहां? इस रचना में जब शकुंतला विदाई के समय क्षणों में जानना चाहती है कि अब वह अपने परिजनों से कब मिल पाएगी तब पिता कण्व का आशीर्वाद पुत्री के लिए देखिए–

'सापत्न भोगकर सर्व वसुंधरा का,
दौषयंति से नृपति की बन जन्मदात्री।
दे राज्यभार उसको पतियुक्त हो तू,
आ मुक्ति हेतु इस आश्रम में बसेगी।'

संपूर्ण वातावरण जैसे विदाई की बेला में प्रकृति पुत्री शकुंतला से विलग होने का आभास दे रहा है प्रकृति, बंधु–बांधव, नभचर, वन–उपवन का दृश्य देखिए– 'बनकर वनबंधु वृक्ष भी, सब इनको कर रहे हैं विदा। इस कल पिकनाद से अंत: प्रतिवचना वनराजि हो रही है।'

अभिज्ञान शाकुंतलम् भारतीय साहित्य में शैवदर्शन की श्रेष्ठतम रचना है। इसमें कालिदास जी ने अभिज्ञान शब्द के माध्यम से प्रत्यभिज्ञा दर्शन की ही प्रतिष्ठा की है। यहां कवि ने पूर्व से ही विद्यमान वस्तु का प्रकटीकरण करके स्वयं को विस्मृति के आवरण से निकाल कर स्वयं के स्वरूप से साक्षात्कार की प्रक्रिया को अभिज्ञान शाकुंतल के माध्यम से समझाया है तथा यह बताने का प्रयास किया है कि सत्य विराट है मन की सीमाओं के बावजूद जो बीज सुप्तावस्था में है उसको जाग्रत करने की पूरी क्षमता

हर मनुष्य में विद्यमान है। राजा दुष्यंत का शकुंतला से मिलन फिर वियोग तत्पश्चात् वास्तविक स्वरूप का अभिज्ञान होना इस कृति की सार्थकता है। नाटक के अंत में कश्यप ऋषि कहते हैं–

'सुरपति जलवाही हों तुम्हारी प्रजा के,
तुम सुख उनको दो यज्ञ के कृत्य दर्शाया।
शत–शत युग दोनों सृष्टि के हों हितैषी,
मिलजुल हित साधो भूमि का, स्वर्ग का भी।'

पराशक्ति के आनंद अंश से शिव व शक्ति तत्त्व व्यक्त होते हैं। इन दोनों के विभूति अंश से ही यह चराचर जगत क्रियमाण है। सत्य अर्थात श्रेयज्ञान कोई व्यक्तिगत सत्ता नहीं है वरन् एक शाश्वत चेतना या चिन्मयीज्ञानधारा है जो सतत् प्रकाशवान है। महाराजा दुष्यंत व शकुंतला के पुत्र भरत जिनके नाम से भारत देश का नाम आज भी जीवंत है। भरत कहते हैं–

'जराग्रणी जन–जन का भला करें,
सरस्वती श्रुतिमहती न क्षीण हो।
महेश का परम प्रसाद प्राप्त हो,
विमुक्त हों हम इस जन्मजाल से।'

इस रचना द्वारा कवि कालिदास ने मनुष्य के अंतर्लोक से उस बहिर्लोक को जोडकर एक ऐसी शक्ति व चेतना का ज्ञान कराया है जो अस्तित्व अनादिकाल से अनवरत रूप से क्रियमाण है। हम अपने शरीर के सूक्ष्मतम अवयवों को गहराई से जानने का प्रयास तो करें। वैदिक ऋषि प्रार्थना करता है – 'तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु' यह संकल्प हर एक मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है।

भारत ज्ञानविज्ञान के क्षेत्र में सदियों से अग्रणी रहा है। अनादिकाल से प्रचलित साहित्य वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, गीता आदि सदियों से प्रेरणा के अक्षय सूत्र रहे हैं। कालिदास का मेघदूत, अभिज्ञान शाकुंतलम्, गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर की

आनन्द का असली अर्थ

सिकन्दर महान ने एक बार आश्चर्य प्रकट करते हुए डायोजनीज से पूछा – 'डायोजनीज, क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम इतने आनंदित क्यों हो? इतनी बेफिक्र क्यों हो?'

डायोजनीज ने प्रश्न के उत्तर में सिकंदर से उल्टा प्रश्न किया– 'सिकंदर, मैं तुमसे पूछता हूँ कि तू इतना दुखी क्यों है? तेरे पास किस चीज की कमी है? तेरे पास धन, ऐश्वर्य, मान–सम्मान, राजपाट सभी कुछ है।'

सिकन्दर ने उत्तर दिया – 'डायोजनीज, मेरी इच्छा विश्वविजय है। मैं एक बार सारे जगत का सम्राट बनना चाहता हूँ। मैं सारा विश्व जीतने के अभियान पर निकला हूँ। जब तक मैं पूरा विश्व नहीं जीत लेता, मैं दुखी हूँ। मैं बेचैन हूँ...'

डायोजनीज ने कहा, 'सिकंदर, मान लो कि तुमने सारा विश्व जीत लिया है, तुम विश्वविजेता बन गए हो। अब बताओ, तुम क्या करोगे?

सिकन्दर को तत्काल कोई जवाब नहीं सूझा। आज तक उसने कभी भी इस बारे में तो सोचा तक न था कि विश्वविजेता बनने के बाद मैं क्या करूँगा, सिकंदर थोडा ठिठका. उसने थोडी देर तक कुछ सोचा, फिर सोचकर बोला – 'डायोजनीज, उसके बाद मैं भी तुम्हारी तरह आनंदित होऊँगा और आराम करूँगा।'

डायोजनीज हँसा और हँसता ही रहा।

फिर कुछ देर बाद बोला – 'सिकन्दर, अगर तुम इस तरह बेफिक्र हो, आनन्दित हो, आराम ही करना चाहते हो तो उसमें अभी इसी समय से कर सकते हो। उसके लिए तुम्हें किसने कहा कि पहले विश्वविजय करनी पडेगी। तुम चाहो तो अभी इसी समय मेरे साथ बैठकर बेफिक्र होकर आराम कर सकते हो, आनंदित हो सकते हो।'

(राष्ट्रभाषा, फरवरी–मार्च २०२२ अंक से)

गीतांजलि आदि जनकल्याण व सर्वे भवंतु सुखिन: का संदेश स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा के रूप में अनुवाद के माध्यम से हमारे सम्मुख प्रस्तुत होते रहे हैं।

श्रेष्ठ बातों के आदान-प्रदान के साथ जनसाधारण में ज्ञान का वितरण करने, सांस्कृतिक गरिमा बनाए रखने हेतु अनुवाद की आज के समय में अत्यंत आवश्यकता है। प्राचीन वैदिक साहित्य के प्रति न सिर्फ भारतीय विद्वान वरन् विदेशी साहित्यकार भी आकर्षित हुए। मैकडानल, मैक्समूलर, कीथ, चीनी, अरबवासी, वर्नियर, कामिल बुल्के, वारान्निकोव व अन्य कई विदेशी भारतीय साहित्य को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखते रहे हैं। पठनीय सामग्री का अपनी भाषा में अनुवाद कर तरह-तरह के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परीक्षण करके अथाह साहित्य भंडार को अपने साथ ले जाकर उन्होंने ज्ञान के क्षेत्र को व्यापक बनाया।

भारतीय साहित्य के विपुल भंडार के संबंध में डॉ. नगेंद्र का कथन है, 'यदि भारतीय साहित्य के संपूर्ण वांग्मय का संचयन किया जाए तो वह यूरोप के संकलित वांग्मय से किसी भी दृष्टि से कम नहीं होगा। वैदिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिंदी, उर्दू, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, उडिया, असमिया, मलयालम, तेलुगू, तमिल आदि भारतीय भाषाओं का समावेश कर लेने पर तो उसका अनंत विस्तार कल्पना से परे, हिंद महासागर से भी गहरा, भारत के भौगोलिक विस्तार से भी व्यापक, हिमालय के शिखरों से भी ऊँचा और ब्रह्म की कल्पना से भी अधिक सूक्ष्म...। डॉ. नगेंद्र का कथन कोरी बयानबाजी नहीं है, यह सत्य कथन है।

डॉ. राहुल सांकृत्यायन ने अपने विदेश प्रवास के दौरान तिब्बत, श्रीलंका आदि देशों में भारतीय पांडुलिपियाँ देखीं और उन्हें भारत की धरोहर बनाकर उनपर शोधकार्य किया। वर्तमान युवा पीढी को भारतीय साहित्य की अनमोल धरोहर से परिचय कराया जाना आवश्यक है। संपूर्ण विश्व भारत की प्राचीन साहित्यिक धरोहर से परिचित है। पुन: जन जागृति हेतु अनुवाद के क्षेत्र में युद्धस्तर पर युवा पीढी को प्रोत्साहित करना होगा। अनुवाद के बिना ज्ञान का प्रसारण संभव नहीं है। भारत के वैभवपूर्ण सांस्कृतिक अतीत को आज जब भूमंडलीकरण के दौर में, विश्वग्राम की अवधारणा प्रभावी है तब संसार के किसी एक देश में हुई ज्ञानविज्ञान की प्रगति की जानकारी अनुवाद के माध्यम से ही प्रचारित-प्रसारित की जा सकती है, अनुवाद एक देश को दूसरे देश से जोडने में सेतु का काम कर सकता है।

एक साहित्यकार को व्यष्टि से लेकर समष्टि तक पहुँचाने में मदद कर सकता है। अनुवाद की उपादेयता एवं महत्ता बहुमुखी है। अनुवाद विधा का भविष्य वर्तमान समय में अत्यंत उज्वल व विकासशील है। भारत ज्ञानविज्ञान के क्षेत्र में सदियों से अग्रणी रहा है। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा के पद मूलभाषा में रचित तता गेय होने के साथ-साथ भारत की अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हुए और उतने ही लोकप्रिय हुए जितने कि मूलभाषा में। दक्षिण के अन्नमाचार्य, त्यागराय, पोतना, वेमना आंडाल अक्कमादन्न, मोल्य अव्वैयार, आलवारों के संकीर्तन, तमिल संगम साहित्य अनुवाद के ही माध्यम से अपनी गरिमा व महत्त्व प्राप्त कर सके हैं।

रामानंद, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, शंकराचार्य, मध्वाचार्य, निंबार्काचार्य आदि दार्शनिक संतों के संदेश उनके सैद्धांतिक विचार, अनुवाद के ही माध्यम से सारे संसार में ग्रहण किए गए। उत्तर भारत के साधु-संत दक्षिण भारत में अनुवाद के माध्यम से ही पहुँच पाए हैं। कश्मीर का शैवसिद्धांत तमिल क्षेत्र में अनुवाद द्वारा ही अपना स्थान बना पाया। अनुवाद के माध्यम से ही महात्मा गांधी जी का सत्य, अहिंसा का संदेश देश के कोने-कोने में पहुँच पाया। अनुवाद के माध्यम से विशिष्ट लेखक और उनकी कृतियाँ एक समृद्ध

सिर्फ अपने लिए खाना विकृति है, दूसरों को खिलाना संस्कृति है।

जनवरी महीने में दो बडे महत्त्वपूर्ण दिन पडते हैं। '१० जनवरी' – 'विश्व हिंदी दिवस' और '३० जनवरी' – 'महात्मा गाँधी निर्वाण दिवस'। वर्ष २००६ में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा घोषित 'विश्व हिंदी दिवस' अब धीरे–धीरे अपनी एक मजबूत पहचान बन चुका है।

आप जानते ही है कि एक अन्य हिंदी दिवस हम १४ सितम्बर को मनाते हैं जो अब सरकारी के साथ–साथ गैरसरकारी क्षेत्रों में हिंदी के वार्षिक उत्सव के रूप में अपनी पहचान बन चुका है। अब उसके साथ–साथ यह विश्व हिंदी दिवस भी अपनी पहचान बनाता जा रहा है। कोरोना काल ने तो विश्व हिंदी दिवस को पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय स्वरूप दे दिया है।

ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग हर आयोजन में किसी–न–किसी प्रवासी भारतीय अथवा विदेशी हिंदी विद्वान के जुडने से हर आयोजन अपने नाम और माँग को सार्थक करता नजर आया। इन्हीं ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से आम लोगों को भी उन देसी–विदेशी विद्वानों और रचनाकारों की जानकारी मिली जो विदेश में रह कर हिन्दी के प्रचार–प्रसार और लेखन में सक्रिय हैं तो, एक तरह से कोरोना काल ने अपनी समस्याओं और भयावहता के साथ कुछ अच्छा फल भी दिया है।

गाँधी जी ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए आजादी से पहले ही जो कोशिश शुरू कर दी थीं उनके लिए हिन्दी के सेवकों और प्रेमियों को आज भी कृतज्ञ होना चाहिए। आजादी की लडाई लडते हुए भी गाँधी जी ने हिन्दी को देश की सम्पर्क और काम–काज की भाषा बनाने के लिए जितने प्रयास किये थे उतने शायद ही किसी अन्य नेता ने किये हों। देश में हिन्दी के प्रचार के लिए उन्होंने जो संस्थाएँ स्थापित की थीं उनमें से अनेक संस्थाएँ आज भी सक्रिय हैं और हिन्दी के प्रचार–प्रसार में लगी हुई हैं।

(हिन्दुस्तानी जबान
जनवरी–मार्च २०२१ अंक से)

साहित्यिक परंपरा का हिस्सा बन पाते हैं। भारत में स्वैच्छिक रूप से अनुवाद के कार्य को बढाने एवं प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। भारतीय क्षेत्रीय साहित्य के अनुवाद हेतु संगठित संस्थाओं की सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर अनुवाद के दायरे बढाने की आवश्यकता है। अनुवाद के प्रति जनसाधारण की अभिरूचि जाग्रत की जाए। व्यवसाय के रूप में अनुवाद को मान्यता प्राप्त हो। अनुवाद को पाठ्यक्रम में प्रवेश व महत्त्व मिले। अनुवादकों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिले व भारतीय साहित्य के प्रति उदासीनता दूर करने के प्रयास किए जाएं। अनुवाद विधा को पुष्पित –पल्लवित करने के लिए विद्वानों को आर्थिक संरक्षण दिया जाए ताकि वे आत्मतुष्टि के लिए अनुवाद कार्य कर सकें। इक्कीसवीं सदी अनुवाद की सदी है।

– अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीस कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय
सागर (म.प्र.) ४७०००१
मोबा. : ९४२५६९३५७०

पुस्तक समीक्षा...

बोधगम्य, प्रबुद्ध - सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध

- संजय भारद्वाज

जिस तरह बीज में वृक्ष होने की संभावना होती है, उसी प्रकार मनुष्य की दृष्टि में सृष्टि का बीज होता है। अनेक बार बीज को अंकुरण के लिए अनुकूल स्थितियों की दीर्घ अवधि तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। लेखिका वीनु जमुआर की इस पुस्तक के संदर्भ में भी यही कहा जा सकता है। युवावस्था में पर्यटन की दृष्टि से बोधगया में बोधिवृक्ष के तले खड़े होकर नववधू लेखिका की दृष्टि में जो समाया, लगभग साढ़े पाँच दशक बाद, वह शब्दसृष्टि के रूप में काग़ज़ पर आया। बोधगम्य, प्रबुद्ध शब्दसृष्टि का नामकरण हुआ, 'सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध।'

नई दिल्ली दि. ९/४/२००२२ को विज्ञान भवन में प्रधानमंत्री कार्यालय के राज्यमंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह और सांसद डॉ. आलोक कुमार सुमन, डॉ. दामोदर खडसे के उपन्यास 'बादल राग' के अंग्रेजी, कन्नड और डोगरी के अनुवाद का लोकार्पण करते हुए।

'सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध', का बड़ा भाग बुद्ध की जीवनयात्रा का कथा शैली में वर्णन करता है। उत्तरार्ध में जातक कथाओं, ऐतिहासिक तथ्यों, बौद्ध मठों की जानकारी, बुद्ध के विचारों का संकलन भी दिया गया है। इस आधार पर इसे मिश्र विधा का सृजन कहा जा सकता है। तथ्यात्मक जानकारी के साथ अनुभूत बुद्ध को पाठकों तक पहुँचाने की अकुलाहट इसमें प्रमुखता से व्यक्त हुई है। पुस्तक की भूमिका में लेखिका ने इस बात को कुछ यूँ अभिव्यक्त भी किया है- 'सत्य और शांति के अटूट रिश्ते का महात्म्य हम तभी समझ पाते हैं जब आंतरिक शांति की जिजीविषा हृदय को कचोटने लगती है।' विचारों की साधना से यह कचोट, जटिलता से सरलता की ओर चल पड़ती है। लेखिका के ही शब्दों में-'विचारों को साध लो तो जीवन सरल हो जाता है।' पग पग पर पगता अनुभव एक समृद्ध पिटारी भरता जाता है। बकौल लेखिका, 'सत्य की सर्वदा जीत होती है, इस बात की पुष्टि अनुभवों की पिटारी करती है।'

जैसा कि उल्लेख किया गया है, कथासूत्र के साथ सम्बंधित स्थान, काल, घटना विशेष के इतिहास की यथासंभव जानकारी और पुरातत्व अभिलेखों का उल्लेख भी पुस्तक में हुआ है। उदाहरण के लिए लोकमान्यता में 'पिप्राहवा' को कपिलवस्तु मानना पर पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा

'तौलिहवा' को कपिलवस्तु के रूप में मान्यता देने का उल्लेख है। बुद्ध के जन्म स्थान लुम्बिनी का वर्णन करते हुए चीनी यात्रियों फाहियान तथा हुएन्संग के यात्रा वृत्तांत का उल्लेख किया गया है। इस संदर्भ में सम्राट अशोक द्वारा ईसा पूर्व वर्ष २४९ में स्थापित बलवा पत्थर के स्तंभ पर प्राकृत भाषा में बुद्ध का जन्म लिखा होने की जानकारी भी है। इस तरह की जानकारी किंवदंती, लोक-कथा, सत्य को तर्क, तथ्य, इतिहास और पुरालेख के प्रमाण देकर पुष्ट करती है। यही इस पुस्तक को विशिष्टता भी प्रदान करती है।

बुढ़ापा, रोग और मृत्यु के पार जाने का विचार बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का आधार बना। एक संन्यासी के संदर्भ में सारथी चन्ना द्वारा कहा गया वाक्य- 'इसने जग से नाता तोड़ ईश्वर से नाता जोड़ लिया है', उनके लिए नये मार्ग का आलोक सिद्ध हुआ। तथापि नया नाता जोड़ने की प्रक्रिया में यशोधरा से नाता तोड़ने और स्त्री के मान को पहुँची ठेस तथा पीड़ा को भी लेखिका ने विस्मृत नहीं किया है। पिता राजा शुद्धोदन के आग्रह पर अपने गृह नगर कपिलवस्तु पहुँचे संन्यासी बुद्ध ने गृहस्थ जीवन में पत्नी रही यशोधरा ने मिलने आने से स्पष्ट मना कर दिया। यशोधरा का दो टूक उत्तर है, मैंने उन्हें नहीं त्यागा था, वे त्याग गए थे हमें।

इतिहास को तटस्थ दृष्टिकोण से देखना वांछनीय होता है। इससे तात्कालिक सामाजिक मूल्यों के अध्ययन का अवसर मिलता है। जटाधारी साधुओं के प्रमुख पंडित काश्यप द्वारा गौतम बुद्ध को रात्रि निवास के लिए आश्रम में स्थान देना, 'मतभेद हों पर मनभेद न हों' की तत्कालीन सुसंगत सामाजिक सहिष्णुता का प्रतीक है। पुस्तक इस सहिष्णुता को अधोरेखित करती है।

भारतीय दर्शन में सम्यकता की जड़ें गहरी हैं। इसकी पुष्टि बुद्ध द्वारा अपने पिता राजा शुद्धोदन को किये उपदेश से होती है। बुद्ध ने पिता से कहा, 'महाराज, जितना स्नेह और प्रेम अपने पुत्र से करते हैं, वही स्नेह और प्रेम राज्य के प्रत्येक व्यक्ति से रखेंगे तो सभी उनके पुत्रवत हो, वैसा ही प्रेम महाराज से करने लगेंगे।' राजवंश के दिनों में किये गए इस उपदेश में काफी हद तक प्रजातंत्र की ध्वनि भी अंतर्निहित है। यह उपदेश काल के वक्ष पर पत्थर की लकीर है।

'सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध' अनित्य से नित्य होने का मार्ग है। यह पुस्तक महात्मा के जीवन दर्शन को सामने रखकर पाठक को विचार करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रेरणा से पाठक अपने भीतर, अपने बुद्ध को तलाशने की यात्रा पर निकल सके तो लेखिका की कलम धन्य हो उठेगी।

मोबाइल नं. ९८९०१२२६०३
writersanjaygmail.com

❤ ❤ ❤

मंगलमय नर्व वर्ष

नववर्ष में आप नित्य पुष्प की भाँति खिलें,
जीवन में सदा हँसते-मुस्कुराते रहें।

ईश्वर की छाया हो पग-पग पर आपके,
नित खुशियों के मधुर गीत गाते रहें।

जगत और प्रकृति का साथ मिले सर्वदा,
नित्य निष्काम कर्म की ज्योति जगाते रहें।

'अखिल' की बार-बार ईश से यही पुकार,
आप सुख-शान्ति सरिता में नहाते रहें।।

- अखिल निगम 'अखिल'
प्रथम तल (तृतीय टावर) पुलिस मुख्यालय,
प्लॉट नं. ३०, सेक्टर-०७,
गोमतीनगर विस्तार, शहीद पथ,
लखनऊ- २२६०१०

रामायण और रामचरितमानस : विश्व के पाँचों भूखंडों में

- प्रो. विजयकुमारन सी.पी.वी.

मूल मानी जानेवाली वाल्मिकी रामायण में २४,००० श्लोक; ५०० सर्ग तथा ७ कांड हैं, जो विश्व का आदिकाव्य माना जाता है।

संत तुलसीदास ने रामचरितमानस में मध्यकालीन परिस्थितियों के अनुरूप अवधी भाषा में २७ श्लोकों, ४६०८ चौपाइयों, १०७४ दोहों, २०७ सोरठों, और ८६ छंदों में, पुन:सृजित रामकाव्य रचा। उक्त मानस के रूपायन के लिए रामनरेश त्रिपाठी द्वारा खोजे गए, ग्रंथों की संख्या ७२ है। (सीपीवी, २०१२, ९६), जबकि तुलसीदास ने ही इसका संकेत दिया था (तुलसीदास, १९६८, १ श्लोक ७) मलयालम में सत्रहवीं सदी तक प्रकाशित एषुत्तच्चन का अध्यात्मरामायणम् किलिप्पाट्टु (शुकगीत) है, जिसका रचनाकाल १५०० ई.से १६०० ई.माना जाता है, और जिसका मूल ३६४३ संस्कृत श्लोकों से महर्षि रामानंद से रचा अध्यात्मरामायणम् है, जो इसका मौलिक प्रतिस्थापन माना जाता है।

विश्व के पाँच भूखंडों में रामायण

विदेशी रामायणवेत्ताओं और आलोचकों से लेकर भारतीय विद्वानों तक रामायण और रामचरितमानस समेत कई राम कथा-कथन रीतियों का मनन करने के बाद वे मंतव्य निकाल रहे हैं, जो विश्व के पाँचों भूखंडों में भारतीय संस्कृति का प्रतीकांतर एवं संकेतशास्त्र का खजाना बनते जा रहे हैं।

यूरोप में रामायण

यूरोप में रामायण का प्रभाव, सबसे ज्यादा बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के के भारतीय प्रवास से ही अंकित हुआ था। पोलैंड, इंग्लैंड, स्पेन, पुर्तगाल,

फ्रांस, इटली, नीदरलँड, स्विटजरलैंड, जर्मनी, रूस जैसे राष्ट्रों में रामायण प्रस्तुतियाँ होती रहती हैं, जो प्रत्येक देश की अपनी-अपनी जबान में होती हैं और कभी-कभी वहाँ के भारतीय दूतावास और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की विस्तार योजना के अंतर्गत भी होती हैं। यूरोप में भारत के तीन सांस्कृतिक केंद्र स्थापित हैं- लंदन का नेहरू केंद्र, जर्मनी का टैगोर केंद्र और स्पेन का भारतभवन यानी कासा द ला इंदिया। ये तीनों समय-समय पर रामायण की कई प्रस्तुतियाँ, यहाँ तक कि दृश्यांकन, पेटिंग, वृत्तचित्र, दूरदर्शन आधारित कार्यक्रम, सिनेमा एवं नाट्यांकन, नृत्त-नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ करते हैं। स्पेन की ऐसी एक नाट्य प्रस्तुति में शीर्षक : रामायण एक सवारी सौ रूपए का विस्तार से उल्लेख

हुआ है, जो यूरोप के कई राष्ट्रों में दर्शाई गई थी। (विजयकुमारन, २०१२, १२२-२६)

बेल्जियम में रामायण

सन् १९३५ में बेल्जियम के पादरी कामिल बुल्के ने भारत आकर डॉ. माताप्रसाद गुप्त के निर्देशन में 'रामकथा-उत्पत्ति और विकास' (१९५०) पर मौलिक शोध कार्य किया। उन्होंने आदिकवि वाल्मीकी को भाव समर्पित करते हुए लिखा -''जिनकी प्रतिभा ने राम-कथा को भारत तथा निकटवर्ती देशों के साहित्य में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया और भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल प्रतीक बना दिया, उन आदिकवि वाल्मीकी को राम-कथा की दिग्विजय का प्रस्तुत विवरण सश्रद्धा समर्पित है।''

जर्मनी में रामायण

जर्मनी में २०१८ में अनूदित एवं स्वतंत्र रूप से प्रकाशित होनेवाली रामायण रॉल्फ थॉमस होचकिन ग्रिफित की अंग्रेजी (१८७४) में वाल्मीकी रामायण पर आधारित है। बोन स्कूल में रामायण पर भाषिक और दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन संपन्न होने का उल्लेख भी है। भारत सरकार के सांस्कृतिक संबंध परिषद की अधिकांश रामायण प्रदर्शिनियाँ जब-जब यूरोप के अन्य भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों में होती थीं, बर्लिन में भी अवश्य होती थीं। हाल ही में जर्मनी में 'अद्भुतरामायण- उत्तरकांड' के प्रकाशन की सूचना मिली है। जर्मनी में रामायण का संक्षिप्त रूप फ्रेडरिक रुकेरत ने प्रकाशित किया। म्यूनिख से प्रकाशित रामायण बालकांड का प्रकाशन जोसफ मेनराड (१८९७) के द्वारा हुआ था।

पोलैंड में रामायण

पाश्चात्य रामायण संस्करणों से पोलैंड में उन्नीसवीं सदी में रामायण का अनुवाद हुआ। अनुवादक किजिजोव्स्की का कथन है कि उन्होंने बच्चों और आम आदमी को दृष्टि में रखकर रामायण का अनुवाद किया है, जिससे भारत की महान मिथकीय परंपरा की जानकारी हासिल हो जाए। इंडियन एक्सप्रेस दैनिकी में जुलाई १७,२०१३ को छपी रिपोर्ट के मुताबिक पोलैंड में मूल भाषा संस्कृत से ही एक उच्च स्तरीय रामायण अनुवाद की अपेक्षा है।

इतालवी व फ्रांसिसी रामायण

गसपरे गोर्रेसियो (१८४३-६७) ने सात भागों में वाल्मीकी रामायण के पुनर्पाठ के रूप में, इतालवी रामायण लिखी। हिप्पोलित फोचे (१८५४-१८५८) का दो भागों में संस्कृत रामायण का भी प्रकाशन हुआ। फ्रांसिसी भाषा में ऑलफ्रेड रोसल (१८०३-१९०७) की रामायण भी उपलब्ध है। इन तीनों का प्रकाशन पैरिस में हुआ।

सन्देश

अब हृदय के पट को फिर से खोलना है।
आदमी को आदमी से जोडना है।
रक्त सबका लाल है फिर भेद कैसा,
द्वेष की दीवार को अब तोडना है।
सूर्य की आँखें भी जाने लाल हैं क्यों,
अब सभी के दिल को फिर झकझोरना है।
राष्ट्र के नभ में हैं बगुले उड रहे क्यों,
नाग के विष दन्त को अब तोडना है।
क्यों अंधेरा हर तरफ छाया हुआ है,
अब अमावस-वृक्ष की जड खोदना है।
जिन्दगी को जिन्दगी देना 'अखिल' अब,
खून के रिश्तों को फिर से जोडना है।।

- अखिल निगम 'अखिल'
प्रथम तल (तृतीय टावर) पुलिस मुख्यालय,
प्लॉट नं. ३०, सेक्टर-०७,
गोमतीनगर विस्तार, शहीद पथ,
लखनऊ- २२६०१०

स्पेन में रामायण

स्पेनिश भाषा में वाल्मीकी रामायण और रामचरितमानस के कुल १७ प्रतिस्थापन व अनुकूलन उपलब्ध हैं। उनमें सेमियोटिक अनुवाद, अनुकूलन और प्रतीकांतर के काफी नमूने पाए जाते हैं। कामेला यूलाते (१९४०:१९६२), लोरा पाल्मा (१९४२), जॉन ग्विक्से (१९४५), जॉन जनेस (१९५२), जॉन बुर्ग (१९६३;१९७०) जोस लूयिस गिमेनस (१९८४), लूयिस अलबर्ट (१९९८), कास्तिया एवं लयोन की कलाओं का शताब्दी प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित भारतीय सांस्कृतिक महोत्सव –चतुर्थ संगीत एवं रंगकला प्रदर्शन (२००८), सर्गे डेमेत्री (२०१२), बार्सिलोना विश्वविद्यालय का वीडियो प्रदर्शन (२०१३), कतलानी भाषा (स्पेन की चार उपभाषाओं में एक) रामायण (२०१४), वालंसिया विश्वविद्यालय का, रोसर नगुरा का शोध– कोसल से बोलीवुड तक : दो हजार साल की रामायण यात्रा – एक सेमियोटिक अध्ययन (२०१७) आदि वाल्मीकी रामायण केंद्रित हैं, तो तुलसीदास के रामचरितमानस पर केंद्रित अनुवादों में एलेना देल रियो के दो (१९९८,२००६) जिनमें पहला आंशिक और दूसरा पूर्ण अनुवाद तथा १९८१ का तीसरा अनुवाद भी दर्शाया जा सकता है। स्थानाभाव के कारण इनका अलग अध्ययन ही संभव है।

इंग्लैंड में रामायण

इंग्लैंड में रामायण का रंगभाष्य सोद्देश्य था, ताकि उससे दक्षिण एशियाई देशों और भारत की पीडित महिलाओं की आर्थिक सहायता हेतु चंदा इकट्ठा किया जा सके। सन् १९९४ में निर्माता शोभा रामन ने इस प्रकार का एक रंगकर्म सजाया। ब्रिटिश लाइब्रेरी में रामायण पर प्रदर्शिनी भी हुआ करती है। भित्ति–चित्र, छाया चित्र और रंगचित्र इनमें प्रमुख हैं। 'तारा आर्टस थियेटर ग्रुप' ने ऐसी एक प्रदर्शिनी में रामायण के पात्रों की शिला–मूर्तियाँ भी लगायीं थीं, जिनको रामलीला की वेश–भूषा से सजाया गया और कृत्रिमता से बचा लिया गया था।

लंदन में अनगुस स्ट्रॉचन द्वारा करोडों डॉलर खर्च करके, एक फिल्म – राम और सीता के आधार पर शेक्सपीयर की शैली में बनी थी। इंग्लैंड के कलामंडल की रामायण 'ब्लाक क्यॉट थियेटर' की प्रस्तुति ऐसा ही एक और कदम था।

गुटनबर्ग ई–बुक परियोजना के अंतर्गत ऑनलाइन समग्र वाल्मीकी रामायण का अंग्रेजी अनुवाद (१८७०–१८७४) रॉल्फ टी हवेच ग्रिफित के द्वारा हुआ, जिसे २००८ में ई–बुक में परिणत किया गया। इसका जर्मन में पुन: अनुवाद हुआ। विलियम कारि एवं ज्योश्रा मार्शमैन का रामायण अनुवाद (१८०६–१८१०) एवं तीन भागों में अगस्त विल्हेम वोन श्लीगल ने आंशिक रूप से लैतिन अनुवाद (१८२९–१९३८) भी किया। मन्मथनाथ गुप्त (१८९१–१८९४) के सात भागों में वाल्मीकी रामायण के गद्यानुवाद उपलब्ध हैं।

रूस में रामायण

अविभक्त सोवियत संघ में रामायण के सशक्त स्वर बारान्निकोव थे, जो अब स्वतंत्र राष्ट्र उक्रेन के निवासी रहे हैं। उन्होंने रामचरितमानस का छंदानुवाद करके तुलसीदास की शैली का भी अनुकूलन किया

है। प्राप्त सूचना के अनुसार वर्तमान रूस में प्रस्तुतियों के रूप में तीन रामायण मालाएँ आयोजित हुई थीं। अक्तूबर १०-११, २०१६ और सितम्बर ११-१३,२०१७ को यथाक्रम उनकी दूसरी और तीसरी प्रस्तुतियाँ हुई।

अमेरिका में रामायण

यूनेस्को द्वारा २००५ में घोषित और २००८ से लागू मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में भारत की परंपरागत रामलीला को भी जोड लिया गया है।

अमेरिका भूखंड में यह कार्य प्रो. रोबर्ट गोल्डमैन व सेली सथरलैंड गोल्डमैन की संयुक्त रामायण अनुवाद परियोजना १९७० से चला। पौला रिचमैन (१९९१,२४) ने ए.के. रामानुजन के आलेख-'तीन सौ रामायण, पाँच उदाहरण और अनुवाद के तीन सिद्धांत', का उल्लेख करते हुए, रामकथा की अनंत कथन-शैली को निरूपित करते हुए, पाश्चात्य भाषाओं को छोडकर, दक्षिण एशिया में ऐसी २३ भाषाएँ हैं, जिनमें रामकथा समय-समय पर अंकित हुई है, श्री. ए.के. रामानुजन ने रामकथा पर रामायणविदों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर केंद्रित १२ आलेखों का संपादन कर, अपनी विस्तृत टिप्पणी, विषयसूची (अंग्रेजी के अक्षर-क्रम में) के साथ २७५ पृष्ठों में, अपने ग्रंथ 'कई रामायण' का प्रकाशन किया है। वह अंग्रेजी में रामकथा विषयक उल्लेखनीय दस्तावेज बन गया है। बाद में चलकर, ओलिबा राय ने भी ए.के. रामानुजन के उपर्युक्त किताब के समानार्थ सामग्री पेश की है।

अफ्रीकी महाखंड और मॉरीशस में रामायण

गिरमिटिया देश दक्षिण अफ्रीका में अधिकांश उत्तर भारतवासियों के द्वारा तथा गांधी जी के होते, कई राज्यों में रामायण यानी रामचरितमानस का प्रचलन खूब हुआ। रामनवमी एवं दीवाली मनाते हुए वहाँ १८६० से १९१०तक के निवासी ही डरबन में मानस पाठ किया करते थे। आंध्र से उत्प्रवासित वहाँ के हिंदू त्यागराज और भद्राचल रामदास कीर्तन करते रहे। वाल्मीकी रामायण को नृत्य नाटक के रूप में प्रस्तुत करते थे। पौला रिचमैन चार प्रसंगों को उठाकर वर्ण संकरता से बचने के राममंत्र अवलंबन की दक्षिण अफ्रीकी विधियाँ समझाती हैं। उसी प्रकार वहाँ के रामायण-दृश्यानुकूलन की बात भी करती हैं।

मॉरीशस में ही विश्व का पहला रामायण केंद्र २००१ में वहाँ के सरकारी संरक्षण में खोला गया है, जो गिरमिटिया देश के रामायणादि के अस्तित्व को आज भी बरकरार रखता है। प्रस्तुत केंद्र में तुलसी जयंती ही नहीं, रामचरितमानस संगीत, दृश्य-श्रव्य अवतरण भी हुआ करते हैं।

भारत में रामायण

संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं की रामायणों में दो प्रकार का अंत मिलता है - एक में राम द्वारा रावण के वध के उपरान्त सीता समेत अयोध्या लौटना और दूसरे में सीता को प्रजावत्सल राम द्वारा चरित्रहीनता का आरोप लगाकर बन में छोडे जाने पर वाल्मीकी द्वारा पालित होकर उनके दो बच्चे लव और कुश के द्वारा राम से पुनर्मिलन का अवसर आते ही सीता का धरती में समा जाना। यहाँ तक कि वाल्मीकी रामायण के प्रथम बालकांड और सातवें उत्तरकांड में क्षेपक माननेवाले विद्वान भी है।

निष्कर्ष

तुलसीदास के ही वचनों से इस प्रकरण को समाप्त करना समीचीन होगा -

''श्रोता वक्ता ग्याननिधि, कथा राम कै गूढ।
किसि समुझौं मैं जीव जड, कलि मल ग्रसित विमूढ।''

(विश्व हिंदी पत्रिका २०२१ से)

भारत के कुछ व्रत और त्यौहार

भारत देश त्यौहारों की भूमि है। भारतीय संस्कृति का जन्म व्यक्ति को तथा समाज को सुसंस्कृत बनाने की दृष्टि से हुआ है। उसके प्रत्येक सिद्धान्त, आदर्श एवं विधि-विधान की रचना इसी दृष्टि से की गई है कि उसका प्रभाव जन-मानस को ऊँचा उठाने एवं परिष्कृत बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

रामनवमी

भारतीय इतिहास में सबसे दैदीप्यमान आदर्श चरित्र भगवान राम का ही है। यह बहुत वर्षों से हिन्दू जाति का पथ-प्रदर्शक रहा है और इसी से यहाँ के निवासी अपने कर्तव्यपालन की शिक्षा पाते रहे हैं।

भगवान राम के चरित्र की सबसे बडी विशेषता यही है कि उन्होंने आजीवन अपने हानि-लाभ, सुख-दुख की परवाह न करके एक मात्र कर्तव्य पालन को ही अपना लक्ष्य रखा और उसके लिए कैसा भी कठिन से कठिन प्रसंग सम्मुख क्यों न आ जाय, वे पश्चातप्रद न हुये। इतना ही नहीं वे बडी से बडी हानि के अवसर पर भी कर्तव्य की रक्षा के लिये सहर्ष प्रस्तुत हो जाते थे और तनिक भी विचलित न होते थे।

भगवान राम के चरित्र का दूसरा पहलू समाज की मर्यादा अथवा अनुशासन को पालन करना तथा कराना था। वे जानते थे कि कोई समाज, जिसके अनुयायिओं में अनुशासन का भाव पूर्ण रूप से न होगा, कभी उन्नति और सफलता के शिखर पर नहीं पहुँच सकती। इसलिये वे सदैव अपने पिता-माता, गुरू और अन्य गुरूजनों की आज्ञा को शिरोधार्थ करते रहे और उन्होंने इसमें कभी उचित-अनुचित तक का विचार नहीं किया। उस समय ब्राह्मण ही समाज के संचालक, पथ-प्रदर्शक थे और भगवान राम आजीवन उनके सामने नतमस्तक रहे और उनके प्रत्येक आदेश का पालन करते रहे। इसी प्रकार अपने छोटे भाइयों और हनुमान, अंगद आदि अनुचरों को भी उन्होंने आदेश पालन की शिक्षा दी। जिन लोगों ने मर्यादा को भंग किया, उनके लिये उन्होंने दण्ड का भी विधान किया और इन उपायों से आर्य-साम्राज्य की जड को मजबूत करके उन्होंने देशवासियों की उन्नति के क्षेत्र में अग्रसर कराया। यह भगवान राम की मर्यादा-पालन की भावना ही थी, जिससे उन्होंने राजगद्दी के बैठके के कुछ समय बाद ही प्रजा के मनोभावों को जानकर सीताजी का परित्याग कर दिया। इस प्रकार भगवान राम का चरित्र हमको अपने कर्तव्य पालन और मर्यादानुसार व्यवहार की शिक्षा देता है और राम नवमी के अवसर पर उनके इन्हीं गुणों का चिन्तन करना और उन्हें अपने जीवन में यथाशक्ति उतारना हमारा कर्तव्य है।

गायत्री-जयन्ती

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी ही गायत्री-जयन्ती का दिन है। गायत्री धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चारों फलों को देनेवाली और भव-सागर की समस्त बाधाओं से परित्राण करनेवाली है। किसी भी महान कार्य को सिद्ध करने के लिये सामूहिक शक्ति की अनिवार्य

रूप से आवश्यकता होती है।

हरियाली तीज

भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है और इसलिये यहाँ वर्षा की ऋतु बडी आवश्यक और महत्त्व की समझी जाती है। जिस वर्ष बरसात समय पर और उपयुक्त परिमाण में हो जाती है उस वर्ष फसल भी संतोषजनक होती है और सभी श्रेणियों के लोग खाने पीने की सुविधा का अनुभव करते हैं। पर जब वर्षा में व्यतिक्रम हो जाता है और वह समय पर नहीं होती या कम होती है तो मनुष्य ही नहीं पशु तक चारे के लिये तरसते हैं और देश में चारों तरफ तबाही और भुखमरी के दृश्य दिखलाई पडने लगते हैं।

श्रावण के शुक्ल पक्ष की तीज मुख्य रूप से वृक्षों का ही त्यौहार है। यह समय ऐसा होता है जब वर्षा भली प्रकार आरम्भ हो जाती है और पृथ्वी माता हरित वस्त्र परिधान धारण कर लेती है। जब कि खेत, मैदान, वन, उपवन हर जगह की हरियाली नेत्रों को सुख देने लगती है।

श्रावणी और रक्षाबन्धन

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा की दो त्यौहार एक ही साथ मनाये जाते हैं- १) श्रावणी २) रक्षाबंधन।

प्राचीन समय में ऋषि-महर्षि लोग आज के दिन से वेद का पारायण आरम्भ करते थे, जिसे 'उपाकर्म' कहा जाता था वैसे तो वेद का पाठ नित्य ही करना द्विज मात्रा का कर्त्तव्य बतलाया गया है पर वर्षा ऋतु में उसके लिये विशेष रूप से व्यवस्था की जाती थी। आषाढ और श्रावण मास में तो यहाँ की जनता विशेष रूप से ऋषि कार्यों में व्यस्त रहती थी। श्रावण के अंत में उस कार्य से अवकाश मिलता था और वे धार्मिक चर्चा के लिये अधिक समय दे सकते थे।

रक्षा-बन्धन- श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को ही रक्षा-बन्धन का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन उत्तर भारत के प्राय: सभी स्थानों में बहिनें अपने भाइयों के हाथों में राखी बाँधती हैं। पुरोहित अथवा अन्य ब्राह्मण भी राखी बाँधते हैं।

सफर अच्छा लगे

चलो न
हाथ पकडकर
कुछ देर
दूर तक,
सफर लंबा है
कहने को हमसफर
राह में बहुत होंगे
अपने संग आये तो
सफर अच्छा लगे
लोग बादलों की
झील बनाकर
नहा लेते हैं तैरकर
सपनों के महल
सजा लेते हैं
सोने-चांदी की
दीवारों में दफन
वस्ल के हिस्से
लोग अर्श पे
नजरें गडाए
सुनाते हैं फर्श के किस्से

- धीरा खंडेलवाल

पवित्र सोच

चेहरे पे मुस्कान हो
न कोई थकान हो
न हो रहमतों की छत जहाँ
ऐसा कोई मकान न हो

सब प्यार की धूप से
कुनमुनाते रहें हरदम
खुशियाँ और सौगातें मिलें
जताने का एहसान न हो

खुदा करे न आए
ऐसा दिन कभी भी
सूरज पे सूरजमुखी का
रूझान न हो

अपनों में प्यार का
सोता पनपता रहे
भरोसा हो इस कदर
इम्तिहान न हो

परवरिश मुकम्मल
पुख्ता जर्फ इतना
कि जमीर को कुचलना
आसान न हो

दुआओं में अपने
पराए की सोच न हो
दिलो-दिमाग में
तल्खी का सामान न हो

झुकें चरण छूने को
जब भी किसी के हाथ
उसके जज्बातों का
कोई अपमान न हो

इक प्यार ही बाशिंदा हो
सभी के दिलों में
घर-घर ही रहे
कभी मकान न हो

हौसलों -तारीफों की
इजाफेदारी में
बराबरी रहे किसी को
अधिमान न हो।

- धीरा खंडेलवाल

सम्पर्क : ५१९, सेक्टर-१६, चंडीगढ (हरिगंधा, मार्च २०२२ अंक से)

जन्माष्टमी

हिन्दू धर्म का सिद्धान्त है कि 'जब कभी धर्म की बहुत अधिक हानि हो जाती है और अधर्म का बोलबाला हो जाता है तो भगवान अवतार लेकर बिगडी हुई परिस्थिति का सुधार करते हैं।'' ऐसा ही समय भारतवर्ष में अब से लगभग ५ हजार वर्ष पहले आया था।

गणेशचतुर्थी

भाद्रपद मास की शुक्लपक्ष की चौथ को गणेशजी का व्रत किया जाता है, क्योंकि उनका जन्म उसी दिन माना गया है। गणेशजी सबसे अधिक लोकप्रिय देवता हैं। प्रत्येक शुभ कार्य में सर्वप्रथम उन्हीं की पूजा-अर्चना की जाती है। साधारण व्यवहारिक निमन्त्रण-पत्रों से लेकर बडे-बडे ग्रन्थों के आदि में 'श्रीगणेशायनमः' लिखने की प्रथा चल गई है।

ऋषि पंचमी

यह व्रत मुख्यतया स्त्रियाँ ही करती हैं और यह भाद्रपद शुक्ल पंचमी को किया जाता है। इस व्रत में हल से जोते हुए खेत से उत्पन्न होने वाली समस्त वस्तुएँ वर्जित मानी जाती हैं, इसलिये फलाहार के रूप में भी जोते हुए खेत की वस्तुओं को नहीं खाना चाहिये, जो बिना जोते बोये स्वयमेव उत्पन्न होते हैं, जैसे साठी का चावल, नारी (करमुआ) का शाक इत्यादि।

इस व्रत की मुख्य शिक्षा यही है कि स्वच्छता की मनुष्य जीवन में बडी आवश्यकता है। जो व्यक्ति

गन्दे रहते हैं, वे अपना और दुसरों का भी नुकसान करते हैं। गन्दगी अनेक रोगों की जड है और फिर जो शरीर से गंदा रहता है, उसका मन भी स्वच्छ रह सकना कठिन है।

बहुत बडे तपस्वियों और समाधि में लीन रहने वाले योगियों की बात तो हम नहीं करते, पर जो लोग समाज में रहते हैं और सब तरह के लोगों से लेन-देन का व्यवहार करते हैं, उनकी गन्दगी से दूसरों का भी अपकार होता है और यह एक बडा पाप है। इसलिये हमको सदा शरीर और मन से शुद्ध रहने का यत्न करना चाहिये और खान-पान में भी यथासम्भव सादगी से काम लेना चाहिये।

अनन्त-चतुर्दशी

भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को अनन्त भगवान् का व्रत किया जाता है। आज के दिन व्रत करनेवाले दोपहर तक निराहार रहते हैं। फिर स्नान करके धूप,दीप, चंदन आदि से अनन्त भगवान् की पूजा करते हैं। इसके बाद किसी एक अन्न का भोजन खाने की प्रथा है, इसलिये बहुत से लोग गेहूँ की पूरी के साथ मैदा से बनी मीठी सेंवई खाते हैं। अनन्त भगवान् की पूजा करके दाहिनी भुजा पर सूत का बना अनन्त भी बाँधते हैं। अनन्त में तीन लरें होती हैं और चौदह गांठें होती है। अनन्त भगवान् अथवा परमात्मा तीनों लोक और चौदह भुवनों के स्वामी हैं, इसी तत्त्व को प्रकट करने के लिये अनन्त इस प्रकार बनाया जाता है।

विजयादशमी

विजयादशमी का त्यौहार, जिसे दशहरा भी कहते हैं, अश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाता है।

दीपावली

कार्तिक कृष्णपक्ष की अमावस्या को दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है। इसे मुख्य रूप से वैश्यों का त्यौहार माना गया है। प्राचीन काल में यह मुख्य रूप से सानवी फसल के तैयार होने की खुशी में मनाया जाता था और इसका नाम शारदीय 'नव सस्येष्टि' था।'नव सस्येष्टि' का अर्थ है 'नये शस्य (अन्न या फसल) के लिए यज्ञ'। इसके अतिरिक्त वर्षाकाल में जल की अधिकता से घरों में और नगरों के वातावरण में जो विकृति आ जाती है और उसके फल से मनुष्यों के स्वास्थ्य पर जो बुरा प्रभाव पडता है, उसके लिये विशेष रूप से स्वच्छता की व्यवस्था करना भी इस त्यौहार का उद्देश्य है। इसके लिये दीवाली से कई दिन पहले घरों की सफाई, लीपा-पोती, सफेदी, मरम्मत आदि होने लगती है और अमावस्या के दिन तक सब लोग अपने घरों और कार्यस्थलों को अपनी शक्ति के अनुसार अधिक से अधिक साफ-सुथरे और हर तरह की गन्दगी से रहित बना देते हैं। दीपावली के पहले की चतुर्दशी को 'नरक चतुर्दशी' कहने का भी यही तात्पर्य है कि उस दिन तक हम अपने आसपास की सब गंदगी को दूर करके लक्ष्मी के स्वागत के लिये तैयार हो जाँय। इसलिये दीपावली का सच्चा सन्देश यही है कि यदि हम अपने राष्ट्र को अपने समाज की समृद्धशाली एवं सम्पत्ति का स्वामी बनाना चाहता हैं तो हम सबको मिलकर दैन्य और दरिद्रता के कारणों का मूलोच्छेदन करना चाहिये। जब देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ हो जायगी, हमारे व्यापार और उद्योग-धन्धों का विकास होगा, अन्य स्थानों से सम्पत्ति का प्रवाह हमारे देश की तरफ होगा, तभी हम सब सुख और वैभव का जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यह सत्य है कि हमारे शास्त्रों ने आध्यात्मिक दृष्टि से त्याग और कष्ट-सहन का महत्त्व बतलाया है, पर वह मार्ग थोडे से ही व्यक्ति अपना सकते हैं।

भैयादूज अथवा यमद्वितीया

दिवाली के बाद कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भैयादूज या यमद्वितीया का त्यौहार होता है। यह भाई और बहिन के स्नेह को प्रकट करनेवाला त्यौहार है। अनेक परिवारों में आर्थिक कारणों से ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिससे लोग बहिनों और लडकियों को देखकर प्रसन्न नहीं होते। ऐसे मनोभावों को मिटाने और भाई-बहिन के बीच सद्भाव कायम रखने के लिये यह भैयादूज का त्यौहार बडा उपयोगी है।

होली

होली का त्यौहार समस्त हिन्दू-त्यौहारों में अपने ढंग का निराला है। वैसे तो यह फसल के तैयार होने के उपलक्ष में 'वासन्ती नव सस्येष्टि' यज्ञ का ही परिवर्तित रूप है। होली का त्यौहार फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है। आज के दिन महर्षि वशिष्ठजी ने सब मनुष्यों के लिये अभयदान माँगा था जिससे वे नि:शंक होकर हँसे-खेलें, उछलें-कूदें। इस प्रकार होली का त्यौहार प्रेम-प्रसार का पर्व है।

अक्षयतृतीया

वैशाख शुक्ल पक्ष की तीज को अक्षय-तृतीया कहते हैं। यह दिन बडा पवित्र माना जाता है और शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन दिये हुये दान और किये गये स्नान, जप, होम आदि सभी कर्मों का फल अनन्त होता है। वे सभी अक्षय (नष्ट न होनेवाले) होते हैं। इस पुण्य तिथि के पूर्वाह्न में जो पुण्य कार्य किये जाते हैं उनका फल अक्षय होता हैं। इसको 'युगादि तृतीया' भी कहते हैं, क्योंकि सतयुग का आरम्भ इसी दिन होता है। मनुष्य के अनेक कर्तव्यों और धर्मों की तरह शरीर-रक्षा पर यथोचित ध्यान देना भी एक परम धर्म है, क्योंकि प्रत्येक धर्म का साधन शरीर द्वारा ही सम्भव है।

('व्रत और त्यौहार' पुस्तक से)

श्री. सुनील मोरे द्वारा स्थापित ईख तोड कामगार विद्यालय नाम - गुरुवर्य ज. गं. फगरे हिंदी विद्यालय (मु. पो. काझड, ता. इंदापूर, जि. पुणे) दि. २७/३/२०२२ को उसका निरीक्षण करने श्री. स्वामीजी, सुनील मोरे, प्रताप गोखले और श्रीराम सावंत सर.

ढाई आखर की महिमा

- अलका अग्रवाल

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की महिमा अपरम्पार।
ढाई आखर से बनी है, ये सृष्टि अपार।।

शंभु, उमा सुत गणेश, धारते वक्रतुण्ड।
रिद्धि-सिद्धि को साध के, करते जग कल्याण।।

विष्णु, लक्ष्मी जी का सदा, मन में रखो ध्यान।
भक्ति, त्याग व कर्मो का मिल जाता है ज्ञान।।

कृष्ण, कान्हा सृष्टि में, रचे बसे कन-कन।
श्रद्धा से तुम करो नमन, मिल जाते भगवन।।

दुर्गा जी के स्त्रोत की, ज्योति जला करो स्तुति।
भाग्य गढ़ेंगी वो तेरा,मिल जायेगी तृप्ति।।

कुण्ड में अग्नि डाल के, करो मंत्र अरु ध्यान।
मंत्र, तंत्र अरु भक्ति से, खुश होते भगवान।।

लेकर मानव का जन्म, करें सदा शुभ कर्म।
अन्त वक्त तक निभाएं, अपना जीवन धर्म।।

सन्त करते त्याग हैं, करते ईश का ध्यान।
श्रद्धा, भक्ति से नत हो, पाते ईश का ज्ञान।।

करो घृणा न किसी से, बांटो सबको प्यार।
प्रेम बांटने से सदा, मिलती ख्याति अपार।।

अर्ध सत्य को जानकर, करो न मिथ्या दर्प।
पूर्ण सत्य हैं सृष्टि में, बस सूर्य और चंद्र।।

पस्त कभी भी न रहो, रहो सदा ही मस्त।
रुष्ट होने से नहीं, होता मनु है तुष्ट।।

मन ना लगे ध्यान में, करो मूर्ति की भक्ति।
करके भक्ति कृष्ण की, पा लोगे तुम शक्ति।।

तृष्णा रही यदि मन में, ना होगी फिर तृप्ति।
मृत्यु आने पर न मिलती, मानव को है शांति।।

ध्वनि से ही ये शब्द हैं, ध्वनि से है श्रुति महान।
ध्वनि से ये संसार है, ध्वनि से है ये प्राण।।

तर्क बुद्धि से ही मनु, मिलता सत्य का ज्ञान।
बिना तर्क अधूरा रहे, सत्यता का भान।।

शत्रु किसी को न समझो, क्रोध का कर दो अन्त।
स्वार्थ भाव को त्याग कर, बन जाओ तुम सन्त।।

स्मृति यदि है तीव्र तो, तुम करो कभी न शर्म।
शब्द, अर्थ, ग्रंथ, श्रुति से, मिल जाता है मर्म।।

- मो. ९३२५०१४१४१
बी१/४ सिटी प्राइड रेजीडेंसी,
सालुंके विहार रोड, वानवडी, पुणे ४०

प्रार्थना

सुख-दुःख की धूप छाह दो
और उसे सहने की शक्ति दो
पराजय की पीडा सहते
विहसने की तरकीब दो।।

आँसुओं के बूंद बूंद से
देखो कैसे रंग लायेंगे
सुख दुख के ताने बाने से
अपना जीवनपट बुनेंगे।।

प्रभू देना हमें दान श्रद्धा का
ध्रुव की अचलता लायेंगे
मुसीबतों की घनी रात में
आशा दीप जलायेंगे।।

(हेल्पर्स ऑफ दि हॅन्डीकॅपड्,
कोल्हापूर ॲन्युअल रिपोर्ट से)

सदियों गूंजते रहेंगे लताजी के गीत...

सरस्वती पूजा के अगले ही दिन गंधर्व लोक को और भी सुंदर बनाने के लिए लताजी देवलोक को प्रस्थान कर गई। ऐसा लगता है जैसे मां सरस्वती इस बार अपनी सबसे प्रिय पुत्री को ले जाने स्वयं आई थीं।

मेरे जैसे प्रत्येक भारतीय का सुर से पहला परिचय लता मंगेशकर जी की दैवीय आवाज ही थी। उनकी संगीतमय सुरीली आवाज का जादू हर भारतीय के अवचेतन मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो गया और आगे भी रहेगा।

रेडियो सिलोन, विविध भारती, आकाशवाणी और दूरदर्शन आदि से गूंजते लताजी के गीत हम सबके वजूद का हिस्सा बन गए हैं। गीतों में प्राण फूंकने का जादू उन्हें महारत हासिल थी। वह कंठ से नहीं, आत्मा से गाती थीं और इसीलिए उनके गीत लोगों के दिल को छू जाते थे। उन्होंने संगीत के कठिन शास्त्र को तीन मियन का मंत्र बनाकर ऐसा सिद्ध किया कि बडे-बडे गवैये, साधक उनकी इस दैवीय सिद्धि को नमन करते थे और यह तय है कि आगे भी सदा करते रहेंगे।

लताजी ने ९२ वर्ष का ऐसा सुंदर और सार्थक जीवन जिया, जिसका एक-एक पल सुरों के रचना संसार के निर्माण में व्यतीत हुआ। लगभग पांच पीढियों ने उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुना और आनेवाली पीढियाँ भी उन्हें इसी तरह सुनती रहेंगी, क्योंकि उनकी आवाज में जो जादू था, उसका कोई सानी नहीं था। यही कारण है कि लाखों संगीत साधकों ने उन्हें अपने हृदय में सरस्वती की भाँति प्रतिष्ठित किया हुआ है।

लताजी भी माता-पिता की भक्त थीं। वह अपनी सफलता में उनके ही आशीर्वाद का उल्लेख करती थीं। अपने गुणी पिता पंडित दिनानाथ मंगेशकर जी से संगीत की शिक्षा लेनेवाली लजाती ने जैसा संघर्ष किया और फिर उपलब्धियाँ के जिस शिखर को छुआ, उसकी कल्पना करना कठिन है। पिता के असामयिक निधन ने उनके जीवन में तमाम अवरोध खडे कर दिए।

छोटी सी उम्र में उनके ऊपर अपने परिवार के पालन-पोषण का दायित्व आ गया। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और खुद को संभालने के साथ परिवार को भी सहारा दिया। उस समय मुंबई सिने जगत पर नूरजहां, शमशाद बेगम, राजकुमारी, अमीर बाई कर्नाटकी आदिकी आवाज गूंजा करती थी। धीरे-धीरे अपने कठिन परिश्रम और लगन से उन्होंने चित्रपट संगीत पर अपनी प्रतिभा का ऐसा लोहा मनवाया कि उनके शानदार आगाज के साथ ही हिंदी चित्रपट की आवाज लताजी की आवाज बन गई। इसी के साथ लता मंगेशकर युग का प्रारम्भ हो गया, जो कभी खत्म नहीं हुआ। इस युग के बगैर गीत-संगीत जगत की कल्पना करना कठिन है।

कहते हैं कि २०१३ में जब हिंदी फिल्म जगत ने अपने सौ साल पूरे किए थे तो लताजी ने कहा था कि इसमें से सात दशक मेरे हैं। लताजी को सुनिए तो ऐसा लगता है, जैसे माँ सरस्वती ने उन्हें स्वयं बैठकर संवारा और सिखाया था। मुझे लगता है कि स्त्री के जीवन का कौनसा ऐसा रूप था, कौन सा ऐसा तेवर था, कौनसा ऐसा भाव था, जो लताजी ने न गाकर दिखाए हों। बच्चे को सुलाती माँ की ममतामयी लोरी हो या भक्तिभाव में डूबी प्रार्थना, प्रेम में आकंठ डूबी अल्हड किशोरी हो या वियोग में तडपती बिरहन, दस वर्ष की बच्ची की आवाज हो या सोलह बरस की चंचला, लताजी सबकी आवाज थीं। ऐसी प्रतिभा बिरले लोगों को ही मिलती है और यही कारण है कि

उनके सुनने और सराहनेवाले दुनिया भर में है।

लताजी कठिन से कठिन गीत पानी की सहजता से गाकर निकल जाती थीं। एक गायिका होने के नाते मैं यह कह सकती हूँ कि उन्होंने भारतमें चित्रपट संगीत और सुगम संगीत में गायन शैली का व्याकरण सजाया, गीत-संगीत को नई परिभाषा दी। इतनी ही नहीं, उन्होंने ही गायकों को मान-सम्मान दिलाने का भी काम किया। यह उनके ही संघर्ष का परिणाम था कि गायकों को नाम और सम्मान मिलना शुरू हुआ। वह सच्चे अर्थों में सुर की साम्राज्ञी थीं, तभी तो गाते हुए सांस की आवाज भी न आने देना, शब्दों का सटीक उच्चारण करना और हर धुन पर शास्त्रीयता को सहज कर पिरो देना, वह बहुत सुगमता से कर लेती थीं। ऐसा वही कर सकता है, जिसने सुरों की सच्ची साधना बहुत लगन से की हो। लताजी का कैसा तो अद्‌भुत व्यक्तित्व था। वह तपस्विनी थीं। वह राष्ट्र को समर्पित एक मननशील व्यक्तित्व को स्वामिनी थीं।

१९६२ में चीन के साथ हुए युद्ध में बलिदान हुए भारतीय सैनिकों के सम्मान में लताजी द्वारा गाया गीत - ए-मेरे वतन के लोगों... आज भी लोगों की आँखों को नम कर देता है। लताजी वीर सावरकर से प्रभावित थीं। उन्होंने सावरकर से मिलकर देश सेवा की अभिलाषा भी प्रकट की थी। तब सावरकर ने लताजी को संगीत सेवा करने की सलाह देते हुए कहा था कि वह इसी के लिए आई हैं। लता मंगेशकर जी ने अपने गीतों से भारत को जैसी संजीवनी प्रदान की, वह अलौकिक है-अद्‌भुत है। लताजी गाते समय चप्पल नहीं पहनती थीं, गाना उनके लिए ईश्वर की पूजा की तरह था। विगत अनेक दशकों से भारत लता दीदी के उन गीतों के साथ जी रहा है, जो हर्ष में पीडा में, प्रेम में, परिहास में, भक्ति में, राष्ट्रप्रेम में, गुंथे थे। हम भाग्यशाली हैं कि उस कालखंड के साक्षी है जिस समय लताजी इस सृष्टि को सुरों से रच रही थीं।

मृत्यु जीवन की पूर्णता है। लताजी अपने जीवनकाल में अमरत्व प्राप्त कर चुकी थीं। वह अमर हैं और अमर रहेंगी। उनके गीत सदियों गूंजेंगे। वह इकलौती थीं। न भूतों न भविष्यति। उनकी स्मृति को वंदन-नमन।

(लेखिका जानी-मानी लोक गायिका हैं)

('नारी का संबल' जनवरी-मार्च २०२२ अंक से)

योग भारती : भारत का ही नहीं विश्व में अद्वितीय संस्थान

भारतीय ऋषि परम्परा, वैदिक जीवन पद्धति एवं योग विद्या की प्राचीन सनातन संस्कृति को संजोये 'योग भारती' भारत का ही नहीं, विश्व में अद्वितीय संस्थान है। विश्व मानवता को योग की प्राचीन परम्परा से अवगत कराने के लिए परमहंस स्वामी सत्यानंद ने योग भारती की स्थापना सन् १९६३ में की थी। अपने स्थापना काल से ही यह संस्था लोगों को योग की प्राचीन पद्धति की ओर वापस लाने के लिए प्रयासरत है, ताकि योग शिक्षण के साथ-साथ विद्यार्थियों को मानवता के प्रति सेवा, समर्पण और करुणा की शिक्षा भी मिले।

राजधानी पटना से १८० किलोमीटर दूर गंगा तट पर बसा प्राचीन नगर मुंगेर एक योग नगर के रूप में विश्वविख्यात है। इस विश्वविद्यालय में लोग मायूस चेहरे लेकर आते हैं, खिलखिलाते हुए वापस जाते हैं। इस संस्थान की मनोहर छटा और योग की अद्‌भुत शक्ति ही लोगों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। इसी से प्रभावित होकर प्रतिवर्ष हजारों देशी-विदेशी पर्यटक योग साधना करने आते हैं। यह संस्था देश-विदेश में तीस हजार शाखाओं के माध्यम से योग संस्कृति के प्रचार-प्रसार में जुटी है।

(संवाद २०२२ अंक से)

आजादी आंदोलन : वे लोग, वे बातें

- अनिल त्रिवेदी

भारत की आजादी के आंदोलन को जीवन में समग्रता से आजादी की समझ के विस्तार का कालखंड भी माना जा सकता हैं। आजादी के आंदोलन से हमारे लोकमानस ने जीवन के विभिन्न सवालों को हल करने में सत्य और अहिंसा को कैसे निजी और सार्वजनिक जीवन का अंग बनाया जाय इसे समझने का प्रयास किया। यह बात हमारे स्वाधीनता आंदोलन के पुरखों ने हमें अपने जीवन और आचरण से जीकर समझायी। इसी से भारत की आजादी के आंदोलन में निजी और सार्वजनिक जीवन की मर्यादा से उस कालखंड के लोगों को केवल आजादी के लिये ही नहीं वरन जीवन की समग्रता को लोकमानस से जोडा। आजादी आंदोलन के भागीदार लोग हमारे लोकजीवन की अनमोल धरोहर है जो हमारे जीवन को सतत ऊर्जा से ओतप्रोत बनाये रखने में हमारा मार्गदर्शन करती हैं।

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने चंपारण्य में गांधीजी के साथ आजादी के आंदोलन में काम करना प्रारम्भ किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'बापू के कदमों में' में गांधीजी के साथ चंपारण आंदोलन के अनुभवी का प्रेरक वर्णन किया है। महात्मा जी के हिंदी-प्रचार के काम से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उनको इंदौर के अधिवेशन का, जो १९१८ में हुआ, सभापति चुन लिया। इंदौर महात्मा जी चंपारण से ही गए। हममें से कई आदमी उनके साथ ही गए। वहाँ का सम्मेलन बडे समारोह के साथ हुआ। दक्षिण भारत में हिंदी-प्रचार के लिए वहीं कुछ रूपए जमा किए गए। सम्मेलन ने, उनकी प्रेरणा से, इस काम को अपना एक मुख्य काम बना लिया।

इंदौर के संबंध में एक छोटी घटना का उल्लेख मनोरंजक होगा- इस घटना में गंभीर तत्त्व भी था। महात्मा जी और उनके साथ गए हुए हम लोग राज्य के अतिथि थे, इसलिए वहाँ खातिरदारी का बडा इंतजाम था। जितने बर्तन हमारे उपयोग के लिए वहाँ रखे गए थे, यहाँ तक की स्नान के लिए पानी रखने के बर्तन भी, चांदी के ही थे। राज्य के कर्मचारी दिन-रात खातिरदारी में लगे रहते थे। महात्मा जी तो अपना सादा-मूंगफली इत्यादि का-भोजन अलग कर लेते थे; पर हम लोगों के लिए नाना प्रकार के पकवान इत्यादि चांदी के बडे थालों और अनेक कटोरियों में हमारे सामने रखे गए। हम लोगों ने खूब आनंद से भोजन किया। महात्मा जी से भोजन के बाद जब मुलाकात हुई तब उन्होंने पूछा कि तुम लोगों ने क्या खाया? जो कुछ हमने खाया था, महादेव भाई ने वर्णन कर दिया। कुछ देर बाद जब राज कर्मचारी आए तब महात्मा जी ने उनसे कहा कि आप इन लोगों को जैसा भोजन दें रहे हैं। वैसे भोजन की इनकी आदत नहीं हैं; इसलिए ये लोग तो यहाँ अस्वस्थ हो जाएँगे। आप इनके लिए मामूली सादा हल्का-फुल्का और सब्जी का प्रबंध कर दीजिए, थोडा दूध भी दे दीजिए; इनके लिए यहीं स्वास्थ्यकर और अच्छा भोजन होगा। बस, उसके बाद से, चांदी के बरतनों में हम लोगों को वहीं सादा भोजन मिलने लगा, जो हमें चंपारण में गांधीजी के साथ मिला करता था।

महात्मा जी इस बात को मानते थे कि स्वाद-इंद्रिय पर विजय पाना बहुत कठिन हैं। हम लोग जो

भोजन करते हैं, वह शरीर को सुरक्षित और पुष्ट बनाने के लिए नहीं, केवल स्वाद के लिए। भोजन का प्रभाव तो स्वास्थ्य पर पडता ही हैं, इसलिए हममें से जिनके पास पैसे होते हैं,वे अधिक और अस्वास्थ्यकर-पर मजेदार-खाना खाकर बीमार पडते रहते हैं; पर जिनके पास पैसे नहीं होते, वे यथेष्ट और स्वास्थ्यकर भोजन न मिलने के कारण कमजोर और बीमार हो जाते हैं। इसलिए उन्होंने चंपारण में ही सादे भोजन और स्वाद पर विजय का उदाहरण हमको स्वयं दिखाया था। चंपारण में पहले तो वे मूंगफली और खजूर ही खाया करते थे। कुछ दिनों के बाद रसोई खाने लगे। पर उसमें भी उनका नियम था। चाहे फल हो या रसोई, किसी में पाँच चीजों में नमक-मिर्च जैसी चीजें भी एक-एक अलग समझी जाती थी। इस तरह यदि हम लोगों की तरफ कोई चीज मसालेदार बनाई जाती तो उनके लिए वह त्याज्य हो जाती; क्योंकि मसाले में ही पांच-छः चीजें हो जातीं। पर इस नियम के अलावा भी वे मसाला जैसी चीजों का इस्तेमाल बुरा समझते थे। कारण यह था कि एक तो ये चीजें बहुत करके गर्म और उत्तेजक होती हैं, दूसरे ये स्वाद को भी बदल देती हैं; इसलिए स्वाद के कारण आदमी अधिक खा लेता है, और ऐसी चीजें खा लेता हैं जो हानिकर होती हैं। चंपारण में जब उन्होंने अन्न खाना शुरू किया तो वे न तो नमक खाते थे और न दूध या दाल ही! सिर्फ चावल और उबाली हुई सब्जी ही खाया करते थे। उबाली हुई चीजों में भी विशेष करके करेला, जो कुछ अधिक पानी देकर उबाल दिया जाता और उसी पानी के साथ भात मिलाकर बहुत स्वाद के साथ वे खा लिया करते। करेला बहुत कडवा होता है। पर हम देखते थे कि उसी को वे आनंद और स्वाद के साथ खा लेते थे। इंदौर में जो उन्होंने हम लोगों के लिए भी पकवान की मनाही कर दी थी, वह भी इसी प्रयोग का एक अंग था। हमने यह भी देखा

जयशंकर प्रसाद

जन्म ३० जनवरी १८८९
मृत्यु १५ नवम्बर १९३७

चिन्ता करता हूँ मैं जितनी
उस अतीत की, उस सुख की,
उतनी ही अनन्त में बनती
जातीं रेखाएँ दुख की।
आह सर्ग के अग्रदूत! तुम
असफल हुए, विलीन हुए।
भक्षक या रक्षक, जो समझो,
केवल अपने मीन हुए।
अरी आँधियो! ओ बिजली की
दिवा-रात्रि तेरा नर्त्तन,
उसी वासना की उपासना,
वह तेरा प्रत्यावर्त्तन।
मणि-दीपों के अंधकार मय
अरे निराशा पूर्ण भविष्य!
देव-दम्भ के महा मेघ में
सब कुछ ही बन गया हविष्य।
अरे अमरता के चमकीले
पुतलो! तेरे वे जयनाद,
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि
बन कर मानो दीन विषाद।
प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित
हम सब थे भूले मद में,
भोले थे, हाँ तरते केवल
सब विलासिता के नद में।

(वीणा, जनवरी २०२२ अंक से)

और समझ लिया कि सादा भोजन स्वास्थ्यकर होने के अलावा कम खर्च भी होगा। पीछे जब बहुत स्थानों पर आश्रम के नाम से संस्थाएँ चलने लगी तब उनमें सादा भोजन अच्छी तरह प्रचलित हो गया। वे जहाँ जाते और जो काम हाथ में लेते, केवल एक विषय को ही मुख्य बनाकर काम में लेते, केवल एक विषय को ही मुख्य बनाकर काम करते। पर जहाँ तक संभव होता, अपने विचारों के संबंध में भी प्रयोग करते ही रहते। यही कारण है कि वे जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं पर केवल रोशनी ही नहीं डाल गए, बल्कि क्रियात्मक रूप से उनके हल करने के उपाय भी बता गए।

– त्रिवेदी परिसर,
३०४/२, भोलाराम उस्ताद मार्ग, ग्राम पिपल्याराव,
ए.बी. रोड, इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)

स्वामी विवेकानंद का उत्तराखंड का मायावती आश्रम

- डॉ. डी. पी. चौधरी, बूंगा द्वाराहाट, अल्मोडा

उत्तराखंड के चंपावत जनपद में स्थित है मायावती आश्रम। इस आश्रम की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने मार्च १८९९ में की । जब स्वामी जी यूरोप यात्रा पर थे तब उनके मन में आल्पस पर्वत को देखकर भारत के हिमालय क्षेत्र में आश्रम बनाने का विचार आया। विदेश भ्रमण के बाद उन्होंने उत्तराखंड के अल्मोडा आदि स्थानों का भ्रमण किया। उन्होंने अपने शिष्य अंगरेज दंपत्ति कैप्टेन सैवियर को पहाड़ में आश्रम के लिए स्थान चयनित करने को कहा । कैप्टन सैवियर को देवदार के घने जंगल में स्थित मायावती स्थान पसंद आया । इस आश्रम के पहले अध्यक्ष की जिम्मेदारी स्वामी स्वरूपानंद को दी गई । कैप्टन सैवियर तथा उनकी पत्नी को सभी व्यवस्थाएं करने की जिम्मेदारी सौंपी गई । इस आश्रम का उद्देश्य साधना और वेद अध्ययन रखा गया ।

सन १९०० में आश्रम के व्यवस्थापक कैप्टन सैवियर के निधन के बाद स्वामी विवेकानंद मायावती आश्रम में रहे । इस आश्रम व क्षेत्र की अद्‌भूत छटा देखकर स्वामी जी बहुत खुश हुए। स्वामी विवेकानंद के प्रिय आश्रम को देखने आज भी देश-विदेश से पर्यटक मायावती आश्रम पहुंचते हैं। यहा पर एक पुस्तकालय भी है।

'प्रबुद्ध भारत' पत्रिका का प्रकाशन यहां से होता रहा है। क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव को देखते हुए यहा आश्रम द्वारा धर्मार्थ चिकित्सालय भी खोला गया है । जहां समय-समय पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा शिविर भी लगाए जाते है । इस दर्शनीय स्थल की सैर करने का जरूर कार्यक्रम बनाएं। समुद्र तल से १९०० मीटर की ऊंचाई पर स्थित मायावती आश्रम पहुंचने के लिए चंपावत जिला मुख्यालय के समीप लोहाघाट से ९ किलोमीटर की यात्रा करनी होती है ।

(बालप्रहरी, जुलाई-सितंबर २०२१)

एक मई कामगार दिन - श्रम दिन

सारी दुनिया मजदूरोंके आधारपर बनी है । जैसे मैंने कहा था कि यह पृथ्वी शेषनागके मस्तकपर स्थिर है । अगर शेषनागका आधार टूट जाय तो पृथ्वी स्थिर नही रह सकेगी, वह जर्रा-जर्रा हो जायेगी।

सबका आधार उन मजदूरोंपर है । इसलिए भगवानने मजदूरोंको कर्मयोगी कहा है । लेकिन सिर्फ कर्म करनेसे कोई कर्मयोगी नहीं होता । हिन्दुस्तानमें कुछ मजदूर खेतोंपर काम करते है, कुछ रेलवे में काम करते है, कुछ कारखानोंमें काम करते है । दिनभर मजदूरी करते है और अपने पसीनेसे रोटी कमाते है । जो शख्स पसीनेसे रोटी कमाता है वह धर्म-पुरुष हो जाता है । उसके जीवनमें पापका आसानीसे प्रवेश नही हो सकता । दिनभर काम कर लिया तो रातको गहरी नींद आती है ।

लडकोंके खेलनेका समय है तो खेलने ही देना चाहिये । काम नही देना चाहिये । लडकोंके तालीमका समय है तो तालीम ही लेने देनी चाहिये। काम नहीं देना चाहिये ।

जूठी पत्तलें उठानेका और लीपनेका । अगर कोई सबेरे उठकर पीसता है तो वह ज्ञानी नहीं, मजदूर कहलायेगा।

बूढा, बच्चा, योगी, ज्ञानी, व्यापारी, वकील, अध्यापक, विद्यार्थी, किसको काम नहीं करना चाहिये। इतना बेकार वर्ग खडा हो जायगा तो बेकारी बढेगी।

ऐसा समाज जहाँ लाचारी से काम करता है तो उसमें कर्मयोगी हो ही नहीं सकते । जो काम टालते है, जो काम नहीं करते है, उनका जीवन भी धार्मिक होता ही नहीं । इस तरह अपना समाज दुराचारी बना है इस कारण अपने समाजमें श्रमकी प्रतिष्ठा नहीं रही।

कामकी इज्जत करनी चाहिये । अगर हम कामकी इज्जत नहीं करते तो बडा भारी धर्मकार्य खोते है ऐसा समभना चाहिये । श्रम करनेवालोंको भी दिमाग है और दिमागी काम करनेवालोंको भी हाथ दिये है तो दोनोंको दोनों काम करना चाहिये । तो भी दोनोंकी इज्जत बढेंगी, प्रतिष्ठा बढेगी ।

विद्या बेचने लगे है । यह गलत है । ''कर्मयोग'' की महिमा, श्रमकी प्रतिष्ठा कायम करनी है तो कीमतमें अधिक फर्क नही करना चाहिये ।

शरीरश्रम करनेवालोंको हम नीच मानते है । मेहतरको अगर एक दिन भी है उसे हम नीच मानते है।

शास्त्रोंमें आया है कि दस उपाध्याय के बराबरीमें एक शिक्षक और सौ शिक्षकोंकी बराबरीमें एक पिता और हजार पिताओंसे भी एक माता बढकर है । ऐसा गौरव किया है माताका ।

हम कृती है, कर्ता नहीं है । हम आरम्भ शरणर्थियोमें घूमते थे । सरकारने पहले उन्हें कोई काम नही दिया था । आटा मिलता था और उसीकी रोटी बनाकर खाते थे। तो हमने क्या देखा, वहाँके सारे लोग इधर-उधर बैठे है, हुक्का पी रहे है, मजा कर रहे है। पर स्त्रियाँ काम ही कर रही थी ।

वे बेकार नही थी । क्योंकी उन्हे पानी लाना, चूल्हा लिपवाना, रोटी पकानी पडती थी ।

हर एकको थोडा न थोडा श्रम करना ही चाहिये। अगर बिना काम किये खाता है तो हमारा जीवन पापी बनता है और दूसरी चीज कामोंका मूल्य समान होना चाहिये । यह जब होगा तब श्रमकी प्रतिष्ठा होगी।

शरीरके अवयव होते है वैसे ही हम समाजरूपी शरीरके अवयव है । कोई हाथ है, कोई पाँव है, कोई आँख है । एक दूसरेका दुख एक दूसरेको महसूस होता है, उसीका नाम समाज है ।

दूसरेके दुखसे दुखी होनेवाले मानव होते है । दूसरके दुखसे दुखी होना ''बडा धर्म'' नहीं, ''मानव-धर्म'' है । समाजकी उन्नती समाज ही कर सकता है। इसलिये मजदूरको मजदूरीमें प्रतिष्ठा माननी चाहिये। सब भाई भाईके समान रहें यह हम करना चाहते है । इसलिये भू-दान यज्ञका विचार सभी चाहते है ।

'श्रमदान एक सामासिक शब्द है । समाजकी उन्नति का एकमात्र मुद्रा लेख 'श्रमदान' में वही मुख्य शब्द है और जीवनका सर्वाधार भी है कि श्रम ही जीवनकी सच्ची आराध्य देवी है ।

'श्रम' स्वतन्त्र क्रिया दर्शक धातु है, जिसका अर्थ परिश्रम करना और थकना है ।

सृष्टिमें यह योजना ही नहीं है कि न्यायत : बिना श्रमके किसीको कुछ मिले । शिकार करनेवाले हिंस्त्र पशुओंको सोते सोते कभी शिकार नहीं मिलता। उसके लिए उन्हें अपनी सारी शक्ति बटोर श्रम करना ही पडता है । जो हिंस्त्र नहीं है उन जानवरोंको भी भागने, चरने या इधर-उधर घूमनेके लिए श्रम करना ही पडता है । शहरकी मक्खियाँ ५-५ मील घूम-घूमकर शहद लाती और 'छत्ता' बनानेके लिए अविश्रांत श्रम करती ही रहती है । पक्षी चारेके लिए सूर्योदयसे सूर्यास्ततक लगातार इधरसे उधर उडते ही रहते है । चींटियोंके दीर्घ उद्योगसे धान्यके भण्डार से, श्रमके मूर्तिमन्त स्मारकरूप वल्मीक (बांबी) के वल्मीक तैयार हो जाते है । इस तरह हम देखते है कि संसारमें प्राणिमात्रको अखण्ड श्रम करना पडता है ।

न केवल प्राणी ही; बल्कि हमारी यह पृथ्वी और नौ ग्रह भी लगातार घूमनेका श्रम करते रहते है । उनका प्रकाश, उष्णता और गति निरन्तर जारी रहती है ।

सूर्य के निरन्तर दर्शनसे उसके श्रमयोग या कर्मयोगका प्रमाण उपस्थित करनेमें बहुत बडा सहायक होता है ।

ईश्वरने भी तप या श्रम करके ही यह सारी सृष्टि रची ।

श्रम करनेवालेके लिए विश्राम जरूरी है । आखिर सृष्टिमें श्रमके कारण ही तो विश्राममें भी मजा है । जो श्रम नही करते, उनके लिए विश्राम भी नहीं । और विश्राम न होनेका अर्थ शान्ति और स्वास्थ्यका भी न होना है । अत: आहार और आरोग्यके लिए श्रम और विश्रामकी दिन और रातके रूपमें अखंड युगल-जोडी बना दी गयी है । जीवनका ही दूसरा नाम 'श्रम विश्रामकी अखण्ड मालिका है ।

सारांश, श्रममें योगको मिलाकर श्रमका विश्राम बनाया जा सकता है । जहाँ दिनमें विश्रामका साधन श्रम है वही रातमें श्रमका साधन विश्राम है।

यदि श्रम न किया जाय तो उस श्रममें विश्रान्ती और उस विश्राममें श्रम-स्फूर्ती मिल नही सकती । यही क्यों, बिना श्रमके अन्न भी ठीक नहीं पचता । श्रमसे अन्नमें जो रुचि मालूम पडती है वह किसी पकवानसे पैदा नहीं की जा सकती । श्रमसे न केवल जीभ, वरन सभी इन्द्रियाँ सतेज बन जाती है । श्रमका देह और बुद्धिपर सर्वोत्तम प्रभाव दीख पडता है ।

('श्रम-दान' पुस्तकसे, ले. शिवाजी न. भावे)

डॉ. स्नेहसुधा कुलकर्णी लिखित 'थोरामोठ्यांच्या सहवासात' पुस्तक

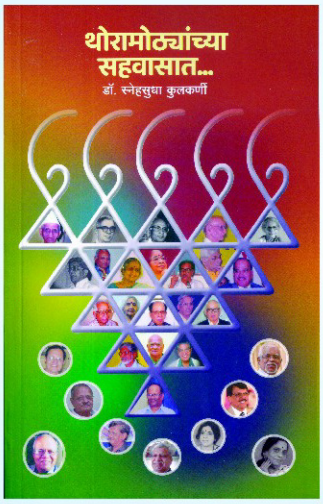

आपके परिचित कौन–कहाँ हैं पहचानिये?

अभी अभी अप्रैल में डॉ. स्नेहसुधा कुलकर्णीने मराठी में लिखा 'थोरामोठ्यांच्या सहवासात' पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, स्नेहसुधाजी का पिछले दस बरसों से अधिक काल 'समिति संवाद' की निर्मिती में बडा सहयोग रहा है, आप प्रकाशक एवं लेखिका है, इस किताब में उन्होने अपने अध्ययन काल में तथा व्यवसाय में जिहोने उन्हे निरपेक्ष सहायता की है उनका परिचय दिया है, जिसमें ख्यातनाम मराठी कवयित्री शांता शेळके, शिरीष पै, समीक्षक डॉ. रा. शं. वाळिंबे, म. ना. अदवंत, रवींद्र भट आदि मान्यवर है । राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मा. जयराम फगरेजी के प्रति आदर व्यक्त करते हुअे स्नेहसुधाजीने लिखा है कि, फगरे सर मेरे हितचिंतक, स्नेही और मार्गदर्शक रहे है, हमारे मन में एक दुसरे के प्रति सद्भावना है, उनकी मित्रता का लाभ होने से मै खुद को भाग्यशाली समझती हूँ ।

इस पुस्तक में ३० व्यक्ती है, जिनका सुबोध परिचय प्रेरणादायी है ।

पुस्तक – थोरामोठ्यांच्या सहवासात

मधुश्री प्रकाशन

पृष्ठ १७२

मूल्य २९० रुपये

पंजीकरण क्र. MAHHIN/2010/48645

स्मरण

नमन

रामधारी सिंह दिनकर

नमन उन्हें मेरा शत बार!
सूख रही है बोटी-बोटी,
मिलती नहीं घास की रोटी,
गढ़ते हैं इतिहास देश का, सहकर कठिन क्षुधा की मार।
नमन उन्हें मेरा शत बार!

अर्द्धनग्न जिनकी प्रिय माया,
शिशु विषण्ण-मुख, जर्जर-काया;
रण की ओर चरण दृढ़ जिनके, मन के पीछे करुण पुकार।
नमन उन्हें मेरा शत बार!

जिनकी चढ़ती हुई जवानी,
खोज रही अपनी कुरबानी,
जलन एक जिनकी अभिलाषा, मरण एक जिनका त्योहार।
नमन उन्हें मेरा शत बार!

दुखी स्वयं जग का दुख लेकर,
स्वयं रिक्त सबको सुख देकर,
जिनका दिया अमृत जग पीता, कालकूट उनका आहार।
नमन उन्हें मेरा शत बार!

वीर, तुम्हारा लिए सहारा,
टिका हुआ है भूतल सारा,
होते तुम न कहीं तो कब का उलट गया होता संसार!
नमन तुम्हें मेरा शत बार!

चरण-धूलि दो, शीश लगा लूँ,
जीवन का बल-तेज जगा लूँ,
मैं निवास जिस मूक स्वप्न का, तुम उसके सक्रिय अवतार
नमन तुम्हें मेरा शत बार!

आजादी के अमृत पर्व पर चित्र मात्र ।

प्रेषक :
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिंदी भवन, १४३९, शुक्रवार पेठ,
बाजीराव रोड, शेवडे गली,
पुणे ४११ ००२ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी : ०२०– २४४५३१५९

सेवा में,
श्री. _____
_____
_____